साप्ताहिक

जागत गांव हमार

पंचायत की विकास गाथा, सरकार तक

RNI-MPHIN/2015/72544

चौपाल से भोपाल तक

भोपाल, सोमवार 11-17 जुलाई 2022, वर्ष-8, अंक-14

भोपाल, इंदौर, उज्जैन, सागर, मुरैना, रीवा, शिवपुरी से एक साथ प्रकाशित

पृष्ठ :-8, मूल्य :- 2 रुपए

किसानों को नहीं मिली मंडी और बाजार, नतीजा- अब बिचौलिए कमा रहे मुनाफा

जैविक प्रोडक्ट को लेकर भरोसे की कमी

जैवित खेती में सुविधाएं जीरो

भोपाल। जागत गांव हमार

मध्यप्रदेश में 7.73 लाख किसान जैविक खेती तो कर रहे हैं, लेकिन जैविक उत्पाद बेचने के लिए मंडी और बाजार नहीं है। जैविक उत्पाद बाहर की मंडियों में जाते हैं। इसका फायदा बिचौलिए कमा रहे हैं। प्रदेश में जैविक खेती पर पढ़िए '**जागत गांव हमार**' की खास रिपोर्ट...।

दिनकर राय जबलपुर के खबरा मझौली के रहने वाले हैं। उन्होंने कहा कि मैं 6 साल से 30 एकड़ जमीन पर ऑर्गेनिक खेती कर रहा हूं। 20 एकड़ में जैविक गन्ना उगाता हूं। इससे तैयार गुड़ मुंबई में 240 रुपए किलो बिकता है, लेकिन आधी रकम बिचौलियों की जेब में चली जाती है। क्योंकि ऑर्गेनिक उत्पाद बेचने के लिए मप्र में बाजार ही नहीं है। सुविधाओं के नाम पर किसानों के लिए कुछ भी नहीं है। बालकृष्ण विश्वकर्मा विदिशा के रहने वाले हैं। बालकृष्ण ने कहा, 15 एकड़ में सात साल से औषधीय, सब्जी व अनाज की खेती कर रहा हूं, लेकिन बेचने के लिए बाजार नहीं है। भोपाल मंडी में रासायनिक खेती से पैदा हो रही सब्जी का ही भाव जैविक सब्जियों को मिलता है। औषधीय और अनाज की कीमत जरूर सामान्य से 30 फीसदी अधिक मिल जाती है। जैविक खेती की सबसे बड़ी समस्या बाजार न होना है।

देशभर में मध्यप्रदेश की स्थिति

मध्यप्रदेश ऑर्गेनिक फार्मिंग में देशभर में नंबर वन है। एसोचैम की रिपोर्ट के अनुसार प्रदेश में जैविक खेती की बहुत संभावनाएं हैं। जैविक खेती के माध्यम से 23 हजार करोड़ की सम्पदा निर्मित हो सकती है। इससे 60 लाख रोजगार के अवसर पैदा हो सकते हैं। प्रदेश की 45 प्रतिशत कृषि भूमि जैविक खेती के लिए उपयुक्त है। इसके बावजूद जैविक खेती कर रहे किसानों को अलग से कोई सुविधा नहीं है।

दो कृषि विवि हैं, लेकिन मदद नहीं| जैविक हल्दी और औषधीय खेती करने वाले जबलपुर के अम्बिका पटेल कहते हैं कि प्रदेश में 2001 से ऑर्गेनिक खेती पर जोर दिया जा रहा है, लेकिन सरकार मदद नहीं दे पा रही है। प्रदेश में दो कृषि विश्वविद्यालय हैं। इसके बावजूद जैविक खेती का प्रमाणिक तरीका नहीं बता पाए।

जैविक खेती मप्र अव्वल| एसोचैम की 2020-21 में जारी रिपोर्ट के मुताबिक दूसरे प्रदेशों के मुकाबले मध्यप्रदेश से सबसे ज्यादा जैविक खेती होती है। यहां 17 लाख 31 हजार 653 हेक्टेयर में प्राकृतिक खेती हो रही है। पिछले साल 5 लाख 636 मीट्रिक टन जैविक सामग्री दूसरे देशों को एक्सपोर्ट की गई थी। इसकी लागत करीब 2,683 करोड़ रुपए थी।

नेचुरल फार्मिंग के 6 लाख किसान बढ़े| एसोचैम की ही 2015 की रिपोर्ट बताती है कि मध्य प्रदेश में जैविक खेती 1.70 लाख किसानों को आजीविका मुहैया कराती है, लेकिन राज्य में कमजोर सुविधाओं की वजह से उनकी आय में इजाफा नहीं हुआ। 2020-21 में जैविक खेती करने वाले किसान बढ़ कर 7.73 लाख हो गए।

जैविक खेती| जैविक खेती में रासायनिक उर्वरक या पेस्टिसाइड्स का प्रयोग नहीं होता। गोबर और गौ-मूत्र से तैयार जैविक खाद का प्रयोग करना होता है। एनओपी (नेशनल प्रोग्राम फॉर ऑर्गेनिक प्रोडक्शन) के मानक के मुताबिक बहुवर्षीय फसलों

किसानों को सरकार से दरकार

- » प्रदेश में ऑर्गेनिक प्रोडक्ट बेचने का अधिकृत मार्केट नहीं है।
- » बाजार में बिक रहे ऑर्गेनिक उत्पाद को लेकर लोगों में भरोसा नहीं।
- » लोग ब्रांड पर भरोसा करते हैं। एक आम किसान के लिए ये संभव नहीं।
- » खादी ग्रामोद्योग की मदद से इसकी मार्केटिंग हो सकती है।
- » किराना दुकान में 10% ऑर्गेनिक उत्पाद रखने का नियम बने।
- » जैविक की गुणवत्ता की जांच के लिए प्रदेश स्तर पर लैब बनाना होगा।
- » जैविक आधारित लघु उद्योग को प्रोत्साहित करना होगा।
- » सरकार चाहे, तो न्यूनतम समर्थन मूल्य पर खरीदी कर सकती है।
- » खरपतवार नियंत्रण के लिए जैविक तरीका बताना होगा।

सीएम शिवराज सिंह कहा था

पिछले दिनों मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने कहा था कि सभी मंत्री प्राकृतिक खेती करें।

इसके बाद ये शब्द काफी सुर्खियों में आया। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भी शिवराज सिंह को प्राकृतिक खेती की सलाह दी थी। सीएम शिवराज सिंह ने गंगा की तर्ज पर नर्मदा के दोनों तटों पर जैविक/प्राकृतिक खेती कराने की घोषणा की है। प्रदेश में 2011 में जैविक नीति भी बनी। 313 विकासखंडों में 3130 गांवों में जैविक खेती भी हो रही है, लेकिन किसानों को जैविक बीज से लेकर मार्केट तक तलाशने पड़ते हैं।

जैविक खेती के लिए हुए प्रयास

एमपी में 2001 से जैविक खेती ग्राम पंचायत स्तर पर शुरू कराई गई। अब तक 313 विकासखंडों में 3130 ग्राम पंचायतों में जैविक खेती हो रही है। 2011 में प्रदेश सरकार जैविक नीति लेकर आई। वर्तमान में खमरिया जबलपुर में 80 हेक्टेयर और बुरहानपुर में 6 हेक्टेयर में जैविक बीज का उत्पादन होता है। इन केंद्रों से सोयाबीन, धान, अरहर, उड़द, मूंग, तिल, मक्का, कोदो, कुटकी, ज्वार के बीज उपलब्ध कराए जाते हैं। जवाहर लाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय 16 तरह के जैविक खाद तैयार कर रहा है। देश की पहली जैविक खेती इकाई इंदौर में शुरू हुई थी। मप्र राज्य जैविक प्रमाणीकरण संस्था भोपाल में खुली है। मंडला में 47 हेक्टेयर भूमि में जेएनकेवी जैविक कृषि अनुसंधान केंद्र संचालित कर रहा है। खंडवा में 2018 में जैविक कपास अनुसंधान केंद्र खुला।

घरेलू जरूरतों के लिए नहीं करना पड़ेगा आयात, केंद्रीय मंत्री ने किया दावा, कहा

2025 तक यूरिया में आत्मनिर्भर हो जाएगा भारत

भोपाल/नई दिल्ली। जागत गांव हमार

केंद्रीय रसायन और उर्वरक मंत्री मनसुख मांडविया ने कहा कि भारत को वर्ष 2025 वर्ष के अंत तक यूरिया आयात करने की आवश्यकता नहीं होगी, क्योंकि पारंपरिक यूरिया और नैनो तरल यूरिया का घरेलू उत्पादन देश की वार्षिक मांग को पूरा करने के लिए पर्याप्त रहने की उम्मीद है। वर्तमान में देश का यूरिया उत्पादन 260 लाख टन है, जबकि स्थानीय मांग को पूरा करने के लिए लगभग 90 लाख टन का आयात किया जाता है। उन्होंने कहा कि हमारा अनुमान है कि हम 2025 के अंत तक यूरिया मामले में आत्मनिर्भरभ हो जाएंगे और आयात पर कोई निर्भरता नहीं रहेगी। पारंपरिक यूरिया और नैनो यूरिया का हमारा घरेलू उत्पादन मांग से अधिक होगा। मंत्री ने कहा कि पारंपरिक यूरिया के लिए लगभग 60 लाख टन उत्पादन क्षमता बढ़ाई जाएगी, जबकि नैनो यूरिया का उत्पादन बढ़कर 44 करोड़ बोतल प्रतिवर्ष होने का अनुमान है, जो 200 लाख टन पारंपरिक यूरिया के बराबर होगा। मांडविया ने कहा कि किसानों ने नैनो यूरिया को अच्छी तरह अपनाया है, जो बहुत उत्साहजनक है। उन्होंने कहा कि तरल पोषक तत्व मिट्टी के स्वास्थ्य को बनाए रखने के साथ-साथ फसल की उपज बढ़ाने के लिए भी प्रभावी है।

नैनो यूरिया से बढ़ेगी किसानों की आय

इफको के साथ-साथ दो अन्य कंपनियों आरसीएफ और एनएफएल द्वारा सात और नैनो यूरिया संयंत्र स्थापित किए जा रहे हैं। इफको नैनो यूरिया प्रौद्योगिकी को इन दो सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों को मुफ्त में हस्तांतरित किया है। नैनो यूरिया के उपयोग से किसानों की आय में औसतन 4,000 रुपए प्रति एकड़ की वृद्धि का अनुमान है। नैनो यूरिया के उपयोग से परिवहन लागत कम होगी और छोटे किसानों को अत्यधिक लाभ होगा।

केन्द्र सरकार को होगी 40,000 करोड़ की बचत

मंत्रालय के एक अधिकारी के मुताबिक, आयात में कमी होने से सरकार को सालाना करीब 40,000 करोड़ की विदेशी मुद्रा की बचत होगी। नैनो यूरिया की एक बोतल यूरिया के एक बैगबै के बराबर होती है। इसके उपयोग से मिट्टी, जल और वायु प्रदूषणदू में प्रभावी रूप से कमी आ सकती है, जो उत्पादन और खपत दोनों स्तरों पर रासायनिक उर्वरक के अधिक इस्तेमाल की वजह से होता है। मौजूदा समय में नैनो यूरिया का उत्पादन पांच करोड़ बोतल प्रतिवर्ष का हो रहा है। प्रमुख सहकारी कंपनी इफको ने बाजार में अभिनव नैनो यूरिया पेश किया है। इसका वाणिज्यिक उत्पादन एक अगस्त, 2021 को गुजरात के कलोल में इफको के संयंत्र से शुरू हुआ।

दिव्यांग-कल्याणी के पेंशन मंजूरी का अधिकार पंचायतों से छिना

भोपाल। राज्य शासन ने दिव्यांग, कल्याणी, अविवाहिता पेंशन स्वीकृत करने के अधिकार ग्राम पंचायतों से छीन लिए हैं। अब ग्राम पंचायत प्रस्ताव तैयार कर जनपद पंचायत को भेजेंगी और सीईओ जनपद पंचायत पेंशन प्रकरणों को मंजूर करेंगे। पेंशन प्रकरण स्वीकृति में देरी और गड़बड़ी के चलते शासन ने यह निर्णय लिया है। सामाजिक न्याय एवं नि:शक्तजन कल्याण विभाग ने इस संबंध में निर्देश जारी कर दिए हैं। केंद्र और राज्य सरकारें इंदिरा गांधी राष्ट्रीय विधवा पेंशन, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय नि:शक्त पेंशन और समग्र सामाजिक सुरक्षा पेंशन के तहत कल्याणी पेंशन, दिव्यांग पेंशन, दिव्यांग शिक्षा प्रोत्साहन राशि, मुख्यमंत्री अविवाहिता पेंशन सहित अन्य पेंशन देती है। पेंशन प्रकरण स्वीकृति व्यवस्था को विकेंद्रीकृत करते हुए राज्य शासन ने वर्ष 2017 में यह अधिकार ग्राम पंचायतों को दे दिए थे। पंचायतों में प्रकरण स्वीकृत करने में कई शिकायतें सामने आई हैं। जिनमें जानबूझकर प्रकरण मंजूर करने में देरी करना और चहेतों को उपकृत करने जैसे आरोप भी लगे हैं।

कृषि मंत्री कमल पटेल के गृह जिले में किसान कर चुके बोवनी

बीजों के सैंपलों की रिपोर्ट अभी तक नहीं आई

हरदा/खिरकिया। जागत गांव हमार

कृषि विभाग खरीफ फसलों की बोवनी के पहले बीज विक्रेताओं से बड़े पैमाने पर सैंपल लेकर विभिन्ना लेबोरेटरी में उनकी गुणवत्ता की जांच करवाता है। लेकिन लेबोरेटरी की जब तक रिपोर्ट आती है, तब तक किसान बीज बो चुका होता है, ऐसे में यदि सैंपल अमानक हो जाए और किसान उसे बो चुका हो तो उस किसान की तो फसल ही बर्बाद हो जाएगी। क्षेत्र में प्री मानसून बरसात के बाद ही किसानों ने खरीफ फसल की बोवनी शुरू कर दी थी। हरदा जिले के खिरकिया ब्लाक में 75 फीसद रकबे में खरीफ खासकर सोयाबीन की बोवनी हो चुकी है। कृषि विभाग द्वारा सोयाबीन की बोवनी से पहले बीज विक्रेताओं के यहां से बीजों की मानकता परखने के लिए जो सैंपल लिए गए थे, उनमें से अधिकांश की रिपोर्ट अभी तक नहीं आई है। गौरतलब है कि बीजों की मानकता को लेकर हर साल सवाल खड़े होते है। अमानक एवं खराब बीजों के कारण बोवनी के बाद कई किसानों के खेतों में अंकुरण नहीं होता है। ऐसे में उन्हें आर्थिक नुकसान उठाना पड़ता है। व्यापारियों द्वारा बेचे जाने वाले बीज की मानकता जांचने का जिम्मा कृषि विभाग का है। लेकिन नियमों की जटिलता एवं समय सीमा के चलते जांच रिपोर्ट आने से पहले ही किसानों को बीज खरीदकर बोवनी करनी पड़ती है। कृषि विभाग द्वारा बीज सहित रासायनिक खाद व दवाईयों का विक्रय करने वाली लायसेंसधारी दुकानों से जांच के लिए सैंपल लिए जाते हैं। लेकिन इन सैंपलों की जांच में लंबा समय लग जाता है। जब तक किसान बोवनी कर चुके होते है। ऐसे में बाद में बीज अमानक निकलते पर किसानों को आर्थिक नुकसान उठाना पड़ता है।

एक महीने बाद आती है जांच रिपोर्ट

कृषि विभाग द्वारा खरीफ के सीजन के पूर्व अभियान चलाकर लायसेंसधारी फर्मों द्वारा विक्रय किए जाने वाले बीजों के सैंपल लिए जाते है। इनकी मानकता जांच रिपोर्ट आने में 30 से 35 दिन का समय लग जाता है। यदि विभाग द्वारा 1 जून को सैंपल भेजे जाते हैं, तो उसकी रिपोर्ट 30 जून के बाद ही मिलती है। जबकि इस बीच किसान बोवनी भी कर चुके होते हैं। इस साल ब्लाक के लाइसेंसी दुकानदारों से बीजों के 50 सैंपल लिए गए थे। जिन्हें जांच के लिए प्रयोगशाला भेजा गया था। जिले से खरीफ फसलों के बीजों के 171 सैंपल लेकर जांच के लिए विभिन्ना लेबोरेटरी में भेजे थे, उनमें से 71 सैंपल की अभी तक जांच रिपोर्ट ही नहीं आई है। कृषि उप संचालक एमपीएस चंद्रावत ने बताया कि 171 में से 100 सैंपल की रिपोर्ट आई है, उनमें से 98 सैंपल के बीजों की गुणवत्ता प्रमाणित हो गई है, मक्का बीज के दो सैंपल अमानक पाए गए हैं।

किसानों को आर्थिक नुकसान

किसान मानसून आने के पूर्व ही व्यापारियों से बीज खरीद लेता है। वर्षा होते ही बोवनी भी कर चुका होता है। बाद में यदि बीज अमानक पाया जाता या फिर खेतों में अंकुरण नहीं होता है तो किसानों को आर्थिक नुकसान उठाना पड़ता है। जिले में दो सौ से अधिक खाद बीज की दुकानें है। विभाग द्वारा सोयाबीन, मूंग, उड़द का सैंपल दुकानों से लिया जाता है। व्यापारियों द्वारा भी सैंपल उपलब्ध करा दिया जाता है। लेकिन जांच रिपोर्ट में लेटलतीफी होने के कारण किसानों एवं व्यापारियों दोनों को बीजों गुणवत्ता के बारे में जानकारी नहीं होती है। ऐसे में व्यापारियों द्वारा विक्रय करना एवं किसानों द्वारा क्रय करना मजबूरी बन जाती है।

एक सप्ताह में मिलनी चाहिए जांच रिपोर्ट

दामोदरपुरा के किसान गयाप्रसाद खोरे का कहना है कि जांच के नाम पर एक माह का समय अधिक होता है। ऐसे में रिपोर्ट आने के बाद जांच का कोई औचित्य नहीं रह जाता है। इसकी कार्रवाई अधिकतम एक सप्ताह में पूरी हो जानी चाहिए, ताकि किसानों को समय रहते बीजों की मानकता का पता चल सके। जांच के नियमों में संशोधन किया जाना चाहिए। किसानों को आर्थिक नुकसान से बचाने के लिए नियम बनाए जाने चाहिए। यदि रिपोर्ट में बीज अमानक या खराब निकलता है, तो संबंधित संस्था द्वारा किसान को होने वाले नुकसान की भरपाई करना चाहिए।

शासन के नियमों के तहत जांच की जाती है। कंपनी के बीज सर्टिफाइड होते है। इसके बाद भी जांच के लिए सैंपल लिए जाते है। जिन्हें राज्य शासन की लैब में परीक्षण के लिए भेजा जाता है। सैंपल पहुंचने के बाद अधिकतम 30 दिन बाद रिपोर्ट आती है। अभी तक जिले में 171 बीजों के सैंपल लिए गए हैं, जो नर्मदापुरम संभाग में सर्वाधिक है। अभी 100 सैंपल की रिपोर्ट आई है। शेष सैंपल की रिपोर्ट कुछ ही दिनों में आ जाएगी।

-एमपीएस चंद्रावत, उप संचालक, कृषि विभाग, हरदा

ड्रोन खरीदना आसान, 5 लाख तक की मिलेगी सब्सिडी

किसानों को मिलेगी ड्रोन के उपयोग की ट्रेनिंग

-खेती के आधुनिक उपकरणों में एक कृषि ड्रोन, -कम लागत में मिलेगा ज्यादा फायदा

भोपाल। जागत गांव हमार

आधुनिक तकनीक का उपयोग अब खेतों में भी होने लगा है। ड्रोन तकनीक से खेतों में दवा का छिड़काव और खाद डाली जाने लगी है। इसी तकनीक से किसानों को भी रूबरू कराया जा रहा है, जिससे वे भी इसका लाभ उठा सकें। कृषि ड्रोन तकनीक किसानों के लिए बहुत फायदेमंद साबित हो सकती है। दुनियाभर में कृषि कार्यों के लिए आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस और ड्रोन का उपयोग बढ़ रहा है। सरकार कृषि क्षेत्र में तकनीकी के उपयोग को बढ़ावा दे रही है ताकि बेहतर उपज के साथ-साथ किसानों की आय में भी वृद्धि हो सके। कृषि ड्रेन खेती के आधुनिक उपकरणों में से एक है, जिसके इस्तेमाल से किसानों को काफी मदद मिल सकती है। कृषि विज्ञान केन्द्र, दतिया के प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रमुख डॉ. आरकेएस तोमर ने बताया कि दतिया जिले में इस मौसम में ड्रोन के उपयोग के परीक्षण आयोजित किए जाएंगे और अपेक्षित परिणाम प्राप्त होने पर किसानों को ड्रोन उपयोग के लिए प्रेरित किया जाएगा। उन्होंने कहा कि ड्रोन एक मानव रहित विमान (यूएवी) है जो मूल रूप से उड़ने वाला रोबोट है। इसे दूर से नियंत्रित किया जा सकता है। सॉफ्टवेयर नियंत्रित सिस्टम के जरिए भी यह उड़ान भर सकता है। ड्रोन तकनीक लगातार विकसित हो रही है।

आज की बात करें तो भारतीय सेना के अलावा मौसम निगरानी, भविष्यवाणी, यातायात निगरानी, राहत और बचाव कार्य, खेती, फोटोग्राफी आदि में ड्रोन का उपयोग हो रहा है। ड्रोन तकनीक जीपीएस और आनबोर्ड सेंस के साथ मिलकर काम करती है। आधुनिक ड्रोन डुअल ग्लोबल नेविगेशन सेटेलाइट सिस्टम (जीएनएसएस) के साथ एकीकृत होते हैं। इसमें जीपीएस और ग्लोनास शामिल होते हैं। ये ड्रोन जीएनएसएस के साथ-साथ नान सेटेलाइट मोड में भी उड़ान भर सकते है।

बंजर या दुर्गम भूमि में बीजरोपण का कार्य दुश्कर, महंगा और समय को नष्ट करने वाला हो सकता है। कृषि ड्रोन, सेंसर तकनीक और इंटेलिजंट सिस्टम द्वारा इस रोपण को बहुत आसान बनाते हैं। रोपण प्रणाली से लैस ड्रोन सीधे मिट्टी में बीज को लगा सकते है। यह कार्य ड्रोन के द्वारा सीड पॉड्स को मिट्टी में सीधा फायरिंग करके किया जाता है। कुछ ड्रोन एक दिन में लगभग एक लाख तक बीज बो सकते है। पिछले कुछ वर्षों में टिड्डी दलों का प्रकोप बढ़ रहा है। टिड्डी दल फसलों, पेड़ों व अन्य प्रकार के पौधों को पूरी तरह से नष्ट कर देते हैं। ड्रोन से 15 मिनट में करीब 2.5 एकड़ में कीटनाशक का छिड़काव कर सकता है। ऐसे में ड्रोन इस समस्या का हल हो सकता है।

ड्रोन के कई फायदे

खेती किसानी में ड्रोन के कई फायदे हैं। बेहतर फसल उत्पादन के लिए ड्रोन का उपयोग किया जा सकता है। इससे सिंचाई योजना, फसल स्वास्थ्य की निगरानी, मिट्टी की गुणवत्ता की जानकारी, कीटनाशकों के छिड़काव आदि में मदद मिल सकती है। ड्रोन के उपयोग से किसानों को उनकी फसलों के बारे में नियमित रूप से सटीक जानकारी मिल सकती है। जिससे उन्हें निर्णय लेने में आसानी हो सकती है। साथ ही समय और संसाधन की बर्बादी को रोका जा सकता है।

बेहतर उपयोग में सक्षम

ड्रोन के उपयोग से चुनौतीपूर्ण क्षेत्रों, संक्रमित क्षेत्रों, लंबी फसलों और बिजली लाइनों के नीचे, दुर्गम पहाड़ी क्षेत्रों, वन क्षेत्रों एवं पेड़ पौधों, बगीचों में कीटनाशकों का छिड़काव कम समय में किया जा सकता है। ड्रोन द्वारा एकत्रित किए गए डाटा की मदद से समयाग्रस्त क्षेत्रों, संक्रमित अस्वस्थ फसलों, नमी के स्तर आदि पर ध्यान केंद्रित किया जा सकता है। कृषि ड्रोन उर्वरक, पानी, बीज और कीटनाशकों जैसे सभी संसाधनों का बेहतर उपयोग करने में सक्षम बनाता है।

सरकार किसानों को अधिक सुविधा प्रदान करने कृषि लागत घटाने और किसानों की आय बढ़ाने के लिए ड्रोन के उपयोग को बढ़ावा दे रही है। इसके लिए ड्रोन खरीदने में छूट दी गई है। पूर्वोत्तर राज्यों में अनूसूचित जाति, अनुसूचित जन, छोटे और सीमांत, महिला और किसानों को ड्रोन खरीदने के लिए 5 लाख की सब्सिडी दी जा रही है। अन्य किसानों को 40 फीसदी या अधिकतम 4 लाख तक की आर्थिक सहायता दी जाएगी।

नरेंद्र सिंह तोमर, केंद्रीय कृषि मंत्री

लाखों का सालाना टर्नओवरः आलीराजपुर का किसान भोपाल-इंदौर में पढ़ा रहा बच्चे

बंजर जमीन पर आम और सब्जियां

-उपज की खेत से ही हो रही बिक्री, पुराने तरीके की खेती को छोड़ा

आलीराजपुर। जागत गांव हमार

मध्यप्रदेश के पश्चिमी क्षेत्र के आदिवासी बहुल आलीराजपुर जिले में अब किसान नई टेक्नीक से खेती करने लगे हैं। इससे फसल के साथ आमदनी भी अच्छी हो रही है। ये कहानी ऐसे ही एक किसान कुंवरसिंह की है। वह सेजा गांव के रहने वाले हैं। पहले पुराने तरीके से खेती करते थे। सालभर में 10 से 12 हजार रुपए कमा पाते थे। 10 से 12 साल पहले उन्होंने इंटरक्रॉपिंग खेती करना शुरू किया। इसमें ड्रिप टेक्नीक से सिंचाई करना शुरू किया। आज सालाना फल और सब्जियां बेचकर 5 लाख तक कमाई कर लेते हैं। खेती किसानी सीरीज में उनसे जानते हैं कि कैसे उन्होंने इंटरक्रॉपिंग खेती करके और नई टेक्नीक अपनाकर अपनी कमाई को बढ़ाया।

कुंवरसिंह ने इंटरक्रॉपिंग खेती के साथ नए इनोवेशन अपनाकर पूरे जिले में अपनी पहचान बनाई है। उन्होंने खेत में हर प्रकार के आम लगाए हैं। इससे हर साल अच्छी कमाई हो जाती है। आम के पेड़ों के बीच खाली पड़ी जमीन में तरबूज, खरबूज, कटहल, भिंडी, मिर्ची और अन्य सब्जियां उगाकर लाखों की कमाई कर रहे हैं। उनके खेत में हर प्रकार के आम के पेड़ लगे हैं। इसके लिए उन्हें जिले में कई बार पुरस्कार मिल चुका है। वह अपने खेतों में जैविक केंचुआ खाद का उपयोग करते हैं।

ऐसे खेती करना शुरू किया

कुंवरसिंह ने बताया कि जब वह घर से अलग हुए तो एक बंजर जमीन मिली थी। मेरे सामने चुनौती बड़ी थी। परिवार और बच्चों की जिम्मेदारी भी मुझ पर थी। जमीन में जगह-जगह पत्थर थे, उनको हटाया, फिर धीरे-धीरे खेती के लायक जमीन तैयार की। शुरुआत में बारिश के समय उड़द और मूंग की खेती करते थे। गर्मी में चने और गेहूं की खेती करते थे। कमाई 10 से 12 हजार रुपए तक ही होती थी। उद्यानिकी विभाग की मदद से इंटरक्रॉपिंग खेती करना शुरू की। इससे कम लागत में ज्यादा मुनाफा होने लगा। खेतों में पाइपलाइन बिछाकर ड्रिप टेक्नीक

उद्यानिकी विभाग ने दिखाई राह

मैं उद्यानिकी विभाग के अफसरों के सपंर्क में आया। मैंने उनसे समझा कि सही तरीके से खेती कैसे की जाती है। सबसे पहले खेत में हर किस्म के आम के पौधे लगाए। बीच में खाली पड़ी जमीन पर सब्जियां लगाना शुरू की। पानी का उपयोग कम हो, इसलिए ड्रिप पद्धति से सिंचाई की। फसलों में वर्मी कंपोस्ट जैविक केंचुआ खाद का इस्तेमाल किया। इससे फसल अच्छी तरह से तैयार होने लगी। मैंने फलों के साथ अंतरवर्ती सब्जियां मल्चिंग का उपयोग करना शुरू किया। इससे न केवल फसल की पैदावार अच्छी हुई, साथ ही मेरी आमदनी भी बढ़ गई। आज मैंने अपना घर बना लिया है। मेरे पास वाहन है। मैंने अपने बच्चों को अच्छी शिक्षा के लिए भोपाल और इंदौर भेजा है।

फर्टिगेशन किसे कहते हैं

फर्टिगेशन दो शब्दों फर्टिलाइजर अर्थात उर्वरक और इरिगेशन अर्थात सिंचाई से मिलकर बना है। ड्रिप सिंचाई में जल के साथ-साथ उर्वरकों को भी पौधों तक पहुंचना फर्टिगेशन कहलाता है। ड्रिप सिंचाई में जिस प्रकार ड्रिपरों के द्वारा बूंद-बूंद कर के जल दिया जाता है, उसी प्रकार उर्वरकों को सिंचाई जल में मिश्रित कर उर्वरक अंतः क्षेपक यंत्र की सहायता से ड्रिपरों द्वारा सीधे पौधों तक पहुंचाया जा सकता है। फर्टिगेशन उर्वरक देने की सर्वोत्तम तथा अत्याधुनिक विधि है।

खेत से ही बिक जाते हैं फल

कुंवरसिंह ने बताया कि वर्मी कंपोस्ट के उपयोग से खेत में उगने वाले फल इतने स्वादिष्ट होते हैं कि खेत से ही बिक जाते हैं। इसके चलते मुझे बाजार तक फल बेचने के लिए नहीं जाना पड़ता। सब्जियों के भी अच्छे दाम मिल जाते हैं।

यह है इंटरक्रॉपिंग

इंटरक्रॉपिंग का अर्थ खेत के बीच-बीच में या खाली जगह में कोई दूसरी फसल लेना है। उदाहरण के लिए गन्ने का अंकुरण और वृद्धि मंद होती है। बीच की फसल ली जा सकती है, क्योंकि इस फसल की रोपाई खाली स्थान छोड़कर की जाती है।

ड्रिप सिंचाई व्यवस्था

ड्रिप सिंचाई व्यवस्था सिंचाई की एक उन्नत तकनीक है, जो पानी की बचत करता है। इस विधि में पानी बूंद-बूंद करके पौधे या पेड़ की जड़ में सीधा पहुंचाया जाता है। इससे पौधे की जड़ पानी को धीरे-धीरे सोखती रहती है। इस विधि में पानी के साथ उर्वरकों को भी सीधा पौधे की जड़ क्षेत्र में पहुंचाया जाता है जिसे फर्टिगेशन कहते हैं।

परंपरागत खेती को छोड़कर 20 एकड़ में अंगूर की खेती की

फल की खेती से दुनिया में नाम कमा रहा रतलाम का किसान

रतलाम । जागत गांव हमार

वर्तमान में सरकार द्वारा खेती को बढ़ावा देने के लिए तमाम प्रयास किए जा रहे हैं और कई योजनाएं भी संचालित की जा रहीं है। वहीं रतलाम जिले के तीतरी गांव के किसान लक्ष्मीनारायण पिछले 40 साल से उन्नत खेती कर रहे हैं। प्रदेश से लेकर पूरी दुनिया में नाम कमा रहे हैं। रतलाम के उन्नत कृषक लक्ष्मीनारायण समय के साथ उन्होंने खुद को प्रोन्नत किया। विपरीत परिस्थितयों में हौंसला नहीं छोड़ा। विदेश जाकर प्रशिक्षण लिया और नई विधियां अपनाई। बाद में उन्होंने स्ट्राबेरी, अनार और एप्पल बेर की भी खेती शुरू की। फलों की इस खेती से उन्हें दौलत और शोहरत दोनों मिली। लक्ष्मीनारायण पाटीदार ने रतलाम जिला कलेक्टेट में कुछ दिन नौकरी भी की, 1985 में वकालत शुरू की। लेकिन दो साल बाद पिताजी ने खेती पर ही ध्यान देने को कहा, तो कुछ अनूठा करने की सोची और परंपरागत खेती को छोड़कर 20 एकड़ में अंगूर की खेती शुरू की। जिसके पौधे महाराष्ट्र से लाए गए। समय के साथ इसमें स्ट्राबेरी ,अनार और एप्पल बेर को भी शामिल किया,जिन्हें तितरी जैसे छोटे गांव में मौसम की प्रतिकूल परिस्थितियों में उगाना और उत्पादन लेना बड़ी चुनौती थी, लेकिन उन्होंने विकलांगता के बावजूद हार नहीं मानी और अंततः सफलता हासिल की।

पौधे और बीज ऑस्ट्रेलिया मंगाते हैं

किसान लक्ष्मीनारायण ने बताया कि वे फल के पौधे ओर बीज ऑस्ट्रेलिया से मंगाते हैं। उन्होंने बताया वे पौधे और बीज अपने यहां के मुकाबले ज्यादा अच्छे होते हैं। उनमें अच्छी फसल और ज्यादा पैदावार भी होती है।

रासायनिक खाद का प्रयोग नहीं

लक्ष्मीनारायण ने बताया कि वे अपनी फल की फसल में यूरिया डीएपी आकद रासायनिक खाद नहीं डालते। फसल के लिए गोबर की खाद खरीदते हैं और वही खाद खेत में डालते है। उन्होंने बताया कि हम कुछ खाद जो लिक्ड रूप में होती है विदेश से मंगाते हैं। पशुपालन सिर्फ घर की आवश्यकता के अनुसार ही करते हैं।

यांत्रिक विधि से छिड़काव

पाटीदार बताते हैं, इजराइल जाकर ड्रिप इरिगेशन, मल्टीपल स्प्रेयर की तकनीक देखी और उसे अपने खेतों में उपयोग में लिया है। बगीचों में दवा छिड़काव के लिए लगभग बीस वर्ष पूर्व माइक्रो स्प्रेयर एवं छोटा जापानी ट्रैक्टर लेकर आया। इससे 10 से 20 फीट ऊंचे पौधों पर दवा के छिड़काव में आसानी होती है।

इजराइल में प्रशिक्षण लिया

पाटीदार ने 1998 में निजी खर्च से इजराइल की यात्रा की और वहां फलों की उन्नत तकनीक का 15 दिनों का प्रशिक्षण लिया जिसे तितरी में लागू किया। वहां बाय आकार में अंगूर की बेलों का ढांचा बनता है, जिससे प्रकाश संश्लेषण अच्छा होने से फल मीठे और वजनदार होते हैं। पतियां भी पीली नहीं पड़ती है।

नोबल बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में नाम दर्ज

उन्हें जिला, राज्य और राष्ट्रीय स्तर के कई पुरस्कार मिले हैं। गत दिनों विदेशी एजेंसी द्वारा उनके कृषि कार्यों का मूल्यांकन करते हुए उनका नाम नोबल बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड दर्ज किया गया है, जो वस्तुतः उनकी उद्यानिकी कृषि के प्रति कर्मठता, समर्पण और सतत सक्रियता का सम्मान है, जिसके वे हक़दार हैं। इससे उनके कृषि कार्यों को मान्यता मिली है। इसका लाभ निश्चित ही कृषक वर्ग और समाज को मिलेगा।

मप्र सरकार ने नीदरलैंड और हालैंड की यात्रा कराई

2014 में मध्यप्रदेश शासन के खर्च पर नीदरलैंड और हालैंड की यात्रा पर भी गए, ताकि वहां की तकनीक का लाभ प्रदेश के किसानों को भी मिल सके।15 दिवसीय इस यात्रा में बागवानी में अवांछित सिंचाई और दवाई/खाद के अति छिड़काव को नियंत्रित करने की तकनीक सीखी। सन 2018 में उनके भाई समरथ पाटीदार और भतीजे कैलाश पाटीदार ने इजराइल की यात्रा की, वहां उन्होंने आधुनिक कृषि तकनीकों को देखा और समझा।

80 बीघा में अंगूर

पाटीदार ने बताया कि फिलहाल संयुक्त परिवार की 300 बीघा जमीन में बागवानी की जा रही है। 80 बीघा में अंगूर,40 बीघा में अनार, 40 बीघा में स्ट्राबेरी और 8 बीघा में एप्पल बेर की खेती की जाती है। स्ट्राबेरी चार माह की फसल है, जिसे सितंबर में लगाया जाता है और सर्दियों में उत्पादन आ जाता है। इसके लिए हर साल अमेरिका से 18 हजार पौधे मंगाए जाते हैं। ड्रिप इरिगेशन में भी विदेश से आयातित खाद का इस्तेमाल किया जाता है। यह खाद शक्तिशाली होता है इसलिए इसकी मात्रा कम लगती है। गोबर का खाद ज्यादा मात्रा में प्रयोग किया जाता है। अंगूर का उत्पादन 12 टन /एकड़ और स्ट्राबेरी से हर मौसम में 3 लाख रुपए /एकड़ का मुनाफा मिल जाता है। अनार और एप्पल बेर भी अच्छी कमाई देते हैं। अंगूर एवं अन्य फसल को स्थानीय स्तर पर नहीं बेचा जाता है, बल्कि दिल्ली और देश के बड़े महानगरों में भेजा जाता है।

वोट की आसः सत्ता-संगठन को मिला अन्नदाताओं को साधने का नया फॉर्मूला

द्रौपदी मुर्मू की उम्मीदवारी किसान वोट में सेंधमारी!

भाजपा की चुनौतीः आदिवासी वोट को अपने भरोसेमंद वोट के रूप में कैसे बदले

एनडीए की राष्ट्रपति पद की उम्मीदवार द्रौपदी मुर्मू 15 जुलाई को भोपाल आएंगी। वे यहां मुख्यमंत्री निवास पर होने वाली भाजपा विधायक दल की बैठक में भाग लेंगी। इस दौरान अजजा वर्ग के सीनियर नेता भी मौजूद रहेंगे। राष्ट्रपति चुनाव की वोटिंग 18 जुलाई को होना है। जिसमें मप्र विधानसभा के 230 विधायक विधानसभा में वोट डालेंगे, जबकि प्रदेश से लोकसभा के 29 और राज्यसभा के 11 सांसद पार्लियामेंट में मतदान करेंगे। द्रौपदी मुर्मू के नाम से भाजपा ने आने वाले विधानसभा चुनाव में सबसे बड़ा पांसा फेंका है। भाजपा ने न सिर्फ उड़ीसा, बल्कि देश के सभी आदिवासी किसानों में अपनी मजबूत पकड़ बनाने के लिए संदेश देना शुरू कर दिया है। उड़ीसा, मप्र, झारखंड, छत्तीसगढ़ और राजस्थान जैसे राज्यों में आदिवासियों की अच्छी खासी तादाद है। होने वाले राष्ट्रपति चुनाव पर पेश है **'जागत गांव हमार'** की एक रिपोर्ट...।

भोपाल। जागत गांव हमार

2023 के विधानसभा चुनाव में भाजपा के केंद्रीय नेतृत्व और संघ ने मप्र संगठन और सरकार को 51 फीसदी वोट का टारगेट दिया है। इस टारगेट को पूरा करने के लिए पार्टी कई जतन कर रही है। ऐसे में एनडीए द्वारा द्रौपदी मुर्मू को राष्ट्रपति पद का उम्मीदवार घोषित करना मप्र भाजपा के लिए किसी लॉटरी से कम नहीं है। जिस तरह मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान और भाजपा प्रदेश अध्यक्ष वीडी शर्मा ने मुर्मू को राष्ट्रपति पद का उम्मीदवार बनाने का जश्न मनाया, उससे ऐसा लगता है जैसे सत्ता और संगठन को 51 फीसदी वोट का फॉर्मूला मिल गया है। दरअसल, 2018 के चुनाव में 41.5 फीसदी वोट मिलने के बावजूद सत्ता से बाहर हुई भाजपा ने 2023 के चुनाव में 51 फीसदी वोट लाने का लक्ष्य तय किया है। इस लक्ष्य को पाने के लिए पार्टी सत्ता में आते ही जुट गई है। इसके लिए पार्टी ने सभी वर्गों को साधने के लिए तमाम तरह के जतन किए हैं। पार्टी को उम्मीद है कि अगर 22 फीसदी आदिवासी वोट अगर भाजपा के पक्ष में आ जाए तो यह लक्ष्य आसानी से पाया जा सकता है। ऐसे में आदिवासी समाज की नेत्री द्रौपदी मुर्मू को राष्ट्रपति पद का उम्मीदवार बनाना मप्र के लिए बड़ी उम्मीद बनकर सामने आया है। गौरतलब है कि मध्यप्रदेश में आदिवासियों की आबादी दो करोड़ से ज्यादा है और देश के सर्वोच्च पद के लिए अपने समाज से उम्मीदवार का घोषित होना एक गर्व की बात है, जिसका जश्न मनाना तो बनता है। दरअसल, द्रौपदी मुर्मू आदिवासी समाज से ही आती है। उन्होंने आदिवासियों के हितों और उत्थान के लिए एक लंबी लड़ाई लड़ी है, जिसके बाद वह आज इस ओहदे पर पहुंच सकी हैं। वह हमेशा से ही आदिवासियों, बालिकाओं के हितों को लेकर सजग रहीं। आदिवासियों से जुड़े मुद्दों पर वे कई बार सरकार को सीधे निर्देश देते हुए नजर आईं है।

84 विस सीटों पर पड़ेगा असर

मप्र में आदिवासी संख्या दो करोड़ से अधिक होने के कारण, यह 84 विधानसभा सीटों पर सीधे सीधे असर डालती है। 2018 के चुनाव में प्रदेश की 230 में से 82 सीटें आरक्षित थीं। इसमें से भाजपा 34 सीट ही जीत सकीं थी। 25 सीटों पर भाजपा को हार का मुंह देखना पड़ा। अनुसूचित जाति की 47 सीटों में से 30 पर वर्तमान में कांग्रेस काबिज है और 17 भाजपा। अब भाजपा कांग्रेस के खाते वाली 30 सीटों पर कब्जा जमाना चाहती है। मध्यप्रदेश की चुनावी रणनीती को भाजपा ने अंतिम रूप देना शुरू कर दिया है। इस बार मध्य प्रदेश विधानसभा चुनावों में पार्टी की रणनीति अपने वोट शेयर को कम से कम 51 प्रतिशत तक पहुंचाने का है। इस लक्ष्य तक पहुंचने के लिए भाजपा ने एससी और एसटी समुदायों के बीच अपनी पैठ को और मजबूत करने का फैसला किया है।

कांग्रेस के वोट बैंक पर पैनी नजर

पार्टी लगातार इस वर्ग से जुड़े मुद्दों को उठा रही है और कांग्रेस के इस वोट बैंक में सेंधमारी के लिए लगातार काम कर रही है। पार्टी ने इसके लिए एक प्लान तैयार किया है। वैसे भारतीय संविधान में सदियों से पीड़ित, शोषित व पिछड़े हुए लोगों, विशेष रूप से आदिवासी जनजातियों के विकास व उत्थान की समुचित व्यवस्था की गई है। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात इस वर्ग को विकास की मुख्य धारा से जोड़ने व वर्गहीन, शोषण-रहित व भयमुक्त समाज की स्थापना के उद्देश्य से देश में अनेकानेक योजनाएं चलाई गई हैं। मध्य प्रदेश सरकार ने भी इस वर्ग के सर्वांगीण विकास के लिए प्रदेश में शैक्षिक, आर्थिक व सामाजिक कार्यक्रमों को उच्च प्राथमिकता के आधार पर संचलित किया है। वर्तमान में मध्य प्रदेश सरकार द्वारा ग्रामीण क्षेत्रों के आर्थिक रूप से पिछड़े वर्ग के व्यक्तियों के आर्थिक तथा सामाजिक उत्थान एवं चहुंमुखी विकास के लिए अंत्योदय योजना चलाई जा रही है।

22 फीसदी वोट पर पूरा फोकस

आगामी विधानसभा चुनाव में 51 फीसदी वोट के टारगेट को पूरा करने के लिए भाजपा का पूरा फोकस 22 फीसदी आदिवासी वोट बैंक पर है। इस वोट बैंक को पाने के लिए प्रदेश में आदिवासियों पर आधारित कई कार्यक्रम आयोजित किए जा चुके हैं। दरअसल, विधानसभा चुनाव 2018 के परिणाम के बाद भाजपा को आदिवासी वोट की ताकत का अंदाजा हो गया है। यही वजह है कि मिशन 2023 के लिए भाजपा का फोकस आदिवासियों पर है। इसके लिए सितंबर 2021 में अमित शाह जबलपुर में राजा शंकरशाह-कुंवर रघुनाथ शाह के 164वें बलिदान दिवस कार्यक्रम में शामिल हुए थे। इसके बाद जनजातीय गौरव दिवस कार्यक्रम में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी भोपाल आए। उन्होंने हबीबगंज रेलवे स्टेशन का नाम गौंड रानी कमलापति के नाम पर किया। फिर भोपाल में अमित शाह तेंदूपत्ता संग्राहक सम्मेलन में शामिल हुए। 2013 के विधानसभा चुनावों में, भाजपा ने इन 47 आदिवासी सीटों में से 37 पर जीत हासिल की थी और लगातार तीसरी बार सत्ता बरकरार रखी थी। हालांकि, 2018 में, कांग्रेस ने इस सीटों में से 31 सीटें जीतीं, जिससे भाजपा को यहां सिर्फ 16 सीट मिली थी। पिछले विधानसभा चुनाव में भाजपा को 41.02 फीसदी वोट मिले थे, जबकि कांग्रेस को 40.89 फीसदी वोट मिले थे।

प्रदेश में कांग्रेस के संसद सदस्य और विधायकों की लेंगे बैठक

कांग्रेस कार्यालय में होगी विधायक दल की बैठक

भोपाल आएंगे राष्ट्रपति पद के कांग्रेस उम्मीदवार यशवंत सिन्हा

इधर, राष्ट्रपति पद के लिए विपक्ष के उम्मीदवार यशवंत सिन्हा 14 जुलाई को भोपाल आएंगे। वे यहां कांग्रेस के सांसद और विधायकों के साथ बैठक करेंगे। इसके लिए कांग्रेस ने प्रदेश कांग्रेस कार्यालय में विधायक दल की बैठक बुलाई है। इसमें सभी विधायकों को अनिवार्य रूप से उपस्थित रहने के निर्देश दिए गए हैं। राष्ट्रपति चुनाव के लिए मतदान 18 जुलाई को होना है। भोपाल स्थित विधानसभा भवन के समिति कक्ष में मतदान होगा। इसमें भाजपा के 127, कांग्रेस के 96, बसपा के दो, सपा के एक और चार निर्दलीय विधायक हिस्सा लेंगे। बसपा के संजीव सिंह, सपा के राजेश शुक्ला और निर्दलीय विधायक विक्रम सिंह राणा भाजपा में शामिल होने की घोषणा कर चुके हैं। दलीय स्थिति के अनुसार भाजपा के नेतृत्व वाले राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन की प्रत्याशी द्रौपदी मुर्मू को प्रदेश से अधिक मत प्राप्त होंगे। प्रदेश कांग्रेस कार्यालय में होने वाली बैठक में सिन्हा अपने लिए सांसद और विधायकों से समर्थन मांगेंगे।

हालांकि, बड़वाह से विधायक सचिन बिरला को लेकर स्थिति स्पष्ट नहीं है कि वे बैठक में आएंगे या नहीं। दरअसल, खंडवा लोकसभा के उपचुनाव के समय वे मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान की उपस्थिति में भाजपा में शामिल होने की घोषणा कर चुके हैं। उनकी सदस्यता समाप्त करने को लेकर कांग्रेस दो बार विधानसभा अध्यक्ष गिरीश गौतम को आवेदन दे चुकी है और दोनों ही बार यह तकनीकी आधार पर निरस्त हो चुका है। इधर, विधायक नारायण त्रिपाठी को लेकर भाजपा संशय में हैं। त्रिपाठी लगातार भाजपा से दूरी बनाए हुए हैं। बसपा विधायक संजीव सिंह कुशवाहा के भाजपा में शामिल होने के बाद यह तय है कि वे द्रौपदी मुर्मू के पक्ष में मतदान करेंगे। हालांकि, विधायक रामबाई को लेकर स्थिति स्पष्ट नहीं है। उन्होंने अभी तक अपने पत्ते नहीं खोले हैं। वहीं, प्रदेश के सभी विधायक 18 जुलाई को मध्य प्रदेश विधानसभा भवन स्थित मतदान केंद्र पर मतदान करेंगे।

मप्र में दलीय स्थिति

कुल लोस सीटें-29
भाजपा- 28
कांग्रेस- 01
कुल रास सीटें- 11
भाजपा- 08
कांग्रेस- 03
कुल विस सीटें- 230
भाजपा- 127
कांग्रेस- 96
बसपा- 02
सपा- 01
निर्दलीय- 04

कांग्रेस के सामने सवालः अपने परंपरागत आदिवासी वोट बैंक को कैसे बचाए रखे

भाजपा में चेहरों की कमी चुनौती

भाजपा के पास आदिवासी चेहरों की कमी की चुनौती बनी हुई है। इसके बावजूद भाजपा प्रदेश में अपना वोट शेयर 50 प्रतिशत के पार ले जाने के लिए प्रयासरत है, जो आदिवासी समुदायों को जोड़े बिना संभव नहीं है। प्रदेश में आदिवासी लगभग 21 प्रतिशत हैं। वर्ष 2003 के विधानसभा चुनाव में भाजपा का वोट शेयर 42.5 प्रतिशत, वर्ष 2008 में 37.6 प्रतिशत, वर्ष 2013 में 45.7 प्रति. एवं वर्ष 2018 में घटकर 41.5 प्रतिशत हो गया। भाजपा का लक्ष्य आदिवासी वोट को भी दस प्रतिशत बढ़ाने का है। यही वजह है कि भाजपा लगातार केंद्रीय नेताओं की मौजूदगी में बड़े आयोजन कर आदिवासियों को संदेश देना चाहती है कि वह उनकी सबसे बड़ी हितैषी पार्टी है। शिक्षा और सस्ते राशन के बाद भी मध्यप्रदेश में सबसे ज्यादा भुखमरी और कुपोषण के शिकार आदिवासी ही हैं। मध्यप्रदेश में आदिवासियों की आबादी डेढ़ करोड़ से ज्यादा है। इनमें भी एक तिहाई भील और इससे कुछ कम आबादी गोंड आदिवासियों की है। वैसे राज्य में 43 से ज्यादा आदिवासी जनजातियां हैं, लेकिन इनमें भी 6 जनजातियां कुल आदिवासी आबादी का 92 फीसदी हैं। जिन बिरसा मुंडा की स्मृति में यह महाआयोजन हो रहा है, उस मुंडा समुदाय की मप्र में जनसंख्या केवल 5 हजार है। कुल की करीब 22 फीसदी आबादी होने से मप्र में 47 सीटें आदिवासियों के लिए आरक्षित हैं।

आपसी समरूपता की निशानी

भाजपा ने सबको चौंकाया

राजनीतिक विश्लेषक कहते हैं कि भाजपा सिर्फ विधानसभा के चुनाव ही नहीं बल्कि लोकसभा के चुनावों में भी द्रौपदी मुर्मू की विजय के साथ बहुत खुश रखने की कोशिश करेगी। दरअसल भाजपा ने आदिवासी समुदाय की महिला को आगे करके राजनैतिक हलकों के अलावा समाज के गैर आदिवासी समुदाय में भी जबरदस्त तरीके से संदेश देने की कोशिश की है। जिस समुदाय के लोगों को पहले की राजनीतिक पार्टियां राष्ट्रपति जैसे पद का उम्मीदवार नहीं घोषित करती थीं, अगर आज भाजपा उसी आदिवासी समुदाय की महिला को राष्ट्रपति पद के लिए उम्मीदवार बनाती है, तो इसे एक आपसी समरूपता की निशानी के तौर पर देखा जाना चाहिए। राजनीतिक विश्लेषक और चुनावों में सर्वे करने वाली एक प्रमुख एजेंसी से जुड़े लोग कहते हैं कि द्रौपदी मुर्मू के नाम को भाजपा की ओर से राष्ट्रपति पद के लिए उम्मीदवार बनाए जाने की पेशकश हैरान करने वाली नहीं है। भाजपा हमेशा से चौंकाने वाले ही नाम सामने लेकर आती है।

महिलाओं का सशक्तिकरण

द्रौपदी मुर्मू के बहाने भाजपा ने दो चीजों में स्पष्ट रूप से संदेश दिया है। एक तो भाजपा ने समाज के उस आदिवासी समुदाय को अंतर्राष्ट्रीय पटल पर सामने रखने की कोशिश की है, जो पूरी दुनिया में सबसे पिछड़े माने जाते हैं। भाजपा ने आदिवासी समुदाय को तो जोड़ा ही है, बल्कि उसके साथ महिला आदिवासी को राष्ट्रपति पद के लिए उम्मीदवार घोषित किया है। यह महिलाओं की सशक्त क्षमता को भी प्रदर्शित करते हुए अपनी पार्टी से जोड़ने का एक निश्चित तौर पर प्रयास है। इसके राजनीतिक मायने भी बिल्कुल स्पष्ट हैं। खासतौर से उड़ीसा में होने वाले विधानसभा के चुनावों से लेकर मध्यप्रदेश, झारखंड, छत्तीसगढ़ और राजस्थान जैसे आदिवासी बाहुल्य इलाकों में जहां पर आदिवासियों की अधिकता है, उनसे सीधे जोड़ा है।

भाजपा ने साध लिए समीकरण

पूर्वोत्तर में भी मिजोरम जैसे राज्यों में जहां आदिवासियों की बहुलता है उनसे भी सीधे कनेक्ट करने की पूर्वोत्तर के राज्यों में भी एक कोशिश मानी जा सकती है। पहले कयास लगाए जा रहे थे कि राष्ट्रपति पद पर संभवतया दक्षिण से कोई व्यक्ति भाजपा की ओर से प्रत्याशी बनेगा। क्योंकि आगामी लोकसभा के चुनावों के लिहाज से दक्षिण भारत के प्रत्याशी को सामने लाकर वहां के राजनीतिक समीकरणों को साधा जा सकता था। लेकिन भाजपा ने राष्ट्रपति पद के लिए उम्मीदवारी में इस तरीके का न कोई प्रयास किया और न ही उम्मीदवारी में इसका कोई अक्स झलकता है। राजनीतिक विश्लेषकों का सीधा-सीधा मानना है कि द्रौपदी मुर्मू के नाम के साथ भाजपा ने राजनीतिक और सामाजिक समीकरणों को बखूबी साधा है।

आदिवासी वोट पर नजर

प्रदेश में 2023 के विधानसभा चुनावों के लिए सत्तारूढ़ भाजपा ने आदिवासियों पर अपना फोकस तेज कर दिया है, ताकि 2018 की तरह उसे बहुमत से दूर न रह जाना पड़े। यूं तो भाजपा पूरे देश में जनजाति समुदाय को अपने पाले में लाने के लिए कई तरह के आयोजन कर रही है, लेकिन मध्य प्रदेश में सबसे अधिक करीब 21.1 फीसदी आबादी के चलते उसकी विशेष अहमियत है, जिनका रुझान ज्यादातर कांग्रेस की ओर रहा है। सो, आदिवासियों पर डोरे डालने की कोशिशें भाजपा के शिखर नेतृत्व की ओर से जारी है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी मन की बात कार्यक्रम में भील जनजाति की प्राचीन पद्धति हलमा की तारीफ करते हैं। उसके कुछ दिन पहले गृह मंत्री अमित शाह भोपाल में आदिवासियों के विशाल सम्मेलन में शामिल हुए। पिछले वर्ष नवंबर में बिरसा मुंडा की जयंती पर विशाल जनजातीय सम्मेलन हो चुका है, जिसमें खुद प्रधानमंत्री मोदी शामिल हुए थे। केंद्र सरकार ने बिरसा मुंडा के जयंती दिवस (15 नवंबर) को जनजाति गौरव दिवस के रूप में मनाने की घोषणा की थी। इन विशाल आयोजनों के अलावा राज्य में जिला स्तर पर लगातार आयोजन का सिलसिला चल रहा है।

प्रदेश में 43 आदिवासी समूह

2011 की जनगणना के मुताबिक मध्य प्रदेश में 43 आदिवासी समूह हैं। प्रदेश में आदिवासियों की आबादी 2 करोड़ से ज्यादा है, जो 230 में से 84 विधानसभा सीटों पर असर डालती है। इनमें सबसे ज्यादा आबादी भील-भिलाला करीब 60 लाख, तो गोंड जनजाति की आबादी करीब 50 लाख है। कोल 11 लाख, तो कोरकू और सहरिया करीब छह-छह लाख हैं। करीब 10 साल बाद ये आंकड़े काफी हद तक बदल चुके हैं। प्रदेश में वर्ष 2023 के अंत में विधानसभा चुनाव होने हैं। इसलिए भाजपा का फोकस आदिवासी वर्ग के कल्याण की योजनाएं बनाने पर दिखाई पड़ रहा है। दरअसल, मप्र में 22 प्रतिशत आदिवासी हैं, जो विस की करीब 82 सीटों पर प्रभाव रखते हैं। प्रदेश में भाजपा की सत्ता बरकरार रखनी है, तो इन्हें साथ लेना जरूरी है। विकास के मुद्दे पर भाजपा कमजोर न पड़े, इसके लिए गरीब कल्याण की योजनाओं को आदिवासी क्षेत्रों पर फोकस करते हुए गढ़ा जा रहा है। जैसे, राशन आपके द्वार योजना, जिसमें आदिवासी गांवों तक राशन पहुंचाया जा रहा है। इसके लिए वाहन भी युवाओं को दिए हैं। इसी तरह प्रधानमंत्री आवास, मुफ्त राशन, रोजगार दिवस, घरों तक नल से पानी पहुंचाने सहित कई योजनाओं का रुख आदिवासी क्षेत्रों की ओर मोड़ दिया गया है।

आदिवासी इलाकों में आरएसएस की पैठ

दरअसल, सारा खेल इन्हीं सीटों पर काबिज होने का है। 2003 के पहले तक मप्र की अधिकांश आदिवासी सीटों पर कांग्रेस का ही कब्जा रहा। कुछ अपवाद छोड़ दे तो इसका बड़ा कारण कांग्रेस के अलावा किसी दूसरी पार्टी की आदिवासियों तक ज्यादा पहुंच ही नहीं थी। बीच में गोंडवाना गणतंत्र पार्टी जैसे दलों ने गोंड इलाकों में जरूर कुछ जोर मारा दिखाया। यूं भी राज्य में सभी आदिवासी समुदाय भाषा, रहन-सहन, संस्कृति,परंपरा और भौगोलिक हिसाब से बंटे हुए हैं। केवल आदिवासी होना ही उनके बीच समान सूत्र है। आदिवासियो के बढ़ते धर्मांतरण के बीच बीते तीन दशकों से आरएसएस और भाजपा ने आदिवासी इलाकों में अपनी पैठ बनाई है। जिसका नतीजा रहा कि 2013 के विधानसभा चुनाव में भाजपा 47 आदिवासी सीटों में से 31 सीटे जीतने में कामयाब रही। आदिवासी क्षेत्रों में ईसाई मिशनरियो की सक्रियता के मद्देनजर संघ ने आदिवासियों को हिंदुत्व से जोड़ने की पुरजोर कोशिश की है। लेकिन 2018 के विधानसभा चुनाव में भाजपा ने 25 आदिवासी सीटें गंवा दीं और ये ज्यादातर कांग्रेस ने जीत ली। संदेश गया कि आदिवासी इलाकों में कांग्रेस की पैठ ज्यादा गहरी है, बजाए भाजपा के। अब चुनौती दोनो दलों के सामने है।

राष्ट्रीय मत्स्य किसान दिवस पर विशेषः मछलियों की हमारे जीवन में उपयोगिता

डा. माधुरी शर्मा, सह प्राध्यापक
डॉ. अजीत प्रताप सिंह, अधिष्ठाता
डॉ. प्रीति मिश्रा, सहायक प्राध्यापक
मत्स्य विज्ञान महाविद्यालय
नानाजी देशमुख पशु चिकित्सा एवं पशुपालन विज्ञान विश्वविद्यालय, जबलपुर

राष्ट्रीय मत्स्य किसान दिवस भारत में मछली पालन का व्यापार खूब तेजी से आगे बढ़ रहा है। किसान और मछलीपालक मछली की कई प्रजातियों का पालन करते हैं। इससे शहरी और ग्रामीण, दोनों क्षेत्र के लोगों को रोजगार मिल रहा है। मछली पालन को बढ़ाने के लिए भारत सरकार की कई योजनाएं हैं, जिनके माध्यम से लोगों को मछली पालन के लिए जागरूक व प्रेरित किया जा रहा है। मछली पालन से संबंधित विभिन्न गतिविधियों को बढ़ाने के लिए मई 2020 में प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजना प्रारंभ की गई है। यह योजना अब तक की सबसे बड़ी योजना है, जिसमें 20050 करोड़ रुपये का बजट 5 वर्षों के लिए दिया गया है।

मछली पालकों को प्रोत्साहित करने के लिए प्रतिवर्ष 10 जुलाई को राष्ट्रीय मत्स्य किसान दिवस मनाया जाता है। यह दिवस वैज्ञानिक डॉ. केएच एलिकुन्ही और डॉ. एचएल चौधरी की याद में हर साल मनाया जाता है। इन वैज्ञानिकों ने 10 जुलाई, 1957 को ओडिशा के कटक में सीआईएफआरआई के पूर्ववर्ती पोंड कल्चर डिविजन वर्तमान में सेंट्रल इंस्टीट्यूट ऑफ फ्रेश वाटर एक्काकल्चर, सीआईएफए, भुवनेश्वर में इंडियन मेजर कार्प में प्रेरित प्रजनन तकनीक हाइपोफिजेशन का सफलतापूर्वक प्रदर्शन किया था। इस दिवस को मनाने का मुख्य उद्देश्य यही है कि देश में मछली पालन को बढ़ावा मिल सके, साथ ही इससे किसान और पशुपालकों को अच्छा मुनाफा मिल सके। मछलियों का प्रयोग मानव सभ्यता के प्रारंभ से ही भोजन के रूप में किया जा रहा है। भोजन की पौष्टिकता के अतिरिक्त मछलियों का मांस स्वादिष्ट एवं सुपाच्य होता है। ताजी अवस्था के अतिरिक्त परिरक्षित अवस्था में भी मछलियों की खपत भोजन के रूप में होती है। कृषि के अन्य आयामों की तुलना में मत्स्य उत्पादन हेतु न केवल कम ऊर्जा की खपत होती है, अपितु लागत भी अपेक्षाकृत कम आती है।

मछलियों का पौषणिक महत्व: मछलियों का मांस पोषक, स्वादिष्ट एवं सुपाच्य होता है। भारतीयों के लिए तो मछलियां सर्वोत्तम संपूरक भोजन का कार्य करती हैं, जिनमें प्रोटीन, वसा, विटामिन ए, ई तथा के के अतिरिक्त कैल्शियम, फॉस्फोरस तथा लौह जैसे खनिजों की उपयोगी मात्रा पायी जाती है। मांस में कार्बोहाइड्रेड की मात्रा बहुत कम पायी जाती है। मछलियों के मांस में सभी दस अनिवार्य अमीनो अम्ल पाये जाते हैं, जिनमें लाइसिन अमीनो अम्ल प्रचुर मात्रा में पाया जाता है। हिस्टिडीन अमीनो अम्ल की प्रचुर मात्रा इनके मांस को विषिष्ट मांसल सुंगध प्रदान करती है। इसके अतिरिक्त मछलियों में पायी जाने वाली वसा में बहुअसंतृप्त अमीनो अम्लों की प्रचुर मात्रा पायी जाती है, जो इसे वनस्पति की तुलना में अधिक उपयोगी बनाती है।

मत्स्य तेल: मत्स्य तेल निम्नलिखित दो प्रकार के होते हैं-**1.मत्स्य काय तेल:** मत्स्य काय तेल मछलियों के संपूर्ण शरीर के निष्कर्षण से प्राप्त किये जाते हैं तथा ये दो प्रकार के होते हैं-

क- सूखा तेल: ये तेल सालमन, हेरिंग, सार्डिन, मैकरेल, एनकोवी तथा सफेद मछली से प्राप्त होते हैं।

ख- अर्द्ध सूखे तेल: इससे आयोडीन की मात्रा कम होती है तथा ये स्प्रैट तथा कार्प मछलियों से प्राप्त होते हैं।

काय तेल के उपयोग: परिष्कृत काय तेलों का उपयोग खाने में होता है।अधिकतर उपयोग कॉस्मेटिक, पेन्ट, लुब्र स्नेहक, मुद्रण स्याही, औषध-निर्माण, उद्योगों में होता है।

2. मत्स्य यकृत तेल: मत्स्य यकृत तेलों में विटामिन ए तथा ई पाये जाते हैं, जिसमे विटामिन की मात्रा सर्वाधिक होती है। यकृत के विभिन्न पिण्डों में संचित विटामिन । की

मात्रा भिन्न-भिन्न होती है। गहरे रंग की शार्क मछलियों के यकृत में हल्के रंग की मछलियों की अपेक्षा अधिक मात्रा में विटामिन। पाया जाता है। टूना तथा कॉड मछलियों के प्रति ग्राम तेल में क्रमश: 2,50,000 तथा 500 यूनिट विटामिन पाया जाता है।

कॉड यकृत तेल: कॉड यकृत तेल विभिन्न कॉड मछलियों जैसे गेडस कैलेरियस तथा गेडस मॉरूआ के यकृत से निष्कर्षित किया जाता है। सूर्य के प्रकाश में विटामिन नष्ट हो जाता है तथा वायु के संपर्क में आने पर तेल गाढ़ा हो जाता है, अत: संग्रहण से पूर्व विटामिन के परिरक्षण हेतु तेल में 0.05 प्रति. नॉर डाई हाइड्रो गुआलैरिटिक अम्ल तथा 0.01प्रति. एस्कॉर्बिल पामिटेट मिला देना चाहिए। कॉड यकृत तेल में सुपाच्य वसा, विटामिन तथा की प्रचुर मात्रा होने के कारण इसका प्रयोग रिकेट्स तथा तपेदिक के रोगियों के उपचार में किया जाता है।

शार्क यकृत तेल: शार्क यकृत तेलों में औसतन प्रति ग्राम तेल 12,000 आईओ विटामिन पाया जाता है। कुछ शार्क मछलियों के यकृत में 3,00,000 आईओ ग्राम विटामिन। पाया जाता है। ताजा निष्कर्षित तेल पीला, नारंगी या भूरे रंग का होता है। शार्क यकृत तेलों के तनुकरण हेतु इसमें विटामिन क् के साथ परिष्कृत मूँगफली का तेल मिश्रित किया जाता है।

मत्स्य प्रोटीन सान्द्र: मत्स्य प्रोटीन सान्द्र एक प्रकार का स्थिर प्रोटीन सान्द्र होता है, जिसे सम्पूर्ण मछली अथवा उसके शारीरिक अंगों से हड्डियों, तेल, जल तथा अन्य पदार्थों को निष्कासित करके बनाया जाता है। यह सुपाच्य प्रोटीन होती है तथा इसमें उपस्थित लाइसिन एवं खनिज इसकी पौष्टिकता को और अधिक बढ़ा देते हैं। मत्स्य प्रोटीन सान्द्र अपने मूल रूप में मानव के लिए रूचिकर नहीं होता, अत: इसका उपयोग मानव आहार में प्रोटीन संपूरक के रूप में किया जाता है। डबलरोटी, बिस्किट आदि में 5-10 प्रतिशत तक इस प्रोटीन सान्द्र को मिलाया जा सकता है। मानव उपभोग हेतु इसकी अनुशंसित मात्रा 35 ग्राम प्रति दिन है।

मत्स्य भोजन: यह अखाद्य मछलियों अथवा मछलियों के अपषिष्ट पदार्थों से तैयार किया जाता है। सार्डिन, मैकरेल, शार्क, रे आदि मछलियां इसके लिए प्रयोग में लाई जाती हैं। मत्स्य भोजन में 60-70: प्रोटीन, 2-15 प्रतिशत वसा तथा 10-20 प्रतिशत खनिजों के अतिरिक्त विटामिन बी1, बी12, ए डी तथा के पाये जाते हैं। मत्स्य भोजन एक उत्कृष्ट जंतु आहार है, जिसका प्रयोग मवेषियों, सुअर एवं कुक्कुट के भोजन के रूप में किया जाता है। इसके अतिरिक्त उर्वरक (फर्टिलाइजर) के रूप में भी किया जाता है।

मत्स्य आटा: यह एक उच्च कोटि का मत्स्य भोजन है, जिसका विलायक निष्कर्षण द्वारा व्यापारिक उत्पादन किया जाता है। इसे गेहूँ अथवा मक्के के आटे के साथ सम्मिश्रित करके डबलरोटी, बिस्किट, केक, मिठाई तथा सूप में मिलाया जाता है। मानव आहार हेतु यह एक अच्छा प्रोटीन संपूरक है।

आज भी दुनिया में 310 करोड़ आबादी की पहुंच से बाहर है स्वस्थ आहार

भरत लाल पांडेय
उन्नत किसान

भले ही दुनिया भर में हम विकास का दंभ भरते रहें पर सच यह है कि अभी भी दुनिया में स्वस्थ आहार 310 करोड़ लोगों की पहुंच से बाहर हैं। आंकड़ों की मानें तो 2019 की तुलना में इस आंकड़े में 11.2 करोड़ का इजाफा हुआ है। यह जानकारी विश्व में खाद्य सुरक्षा और पोषण की स्थिति पर संयुक्त राष्ट्र द्वारा जारी हालिया रिपोर्ट 'द स्टेट ऑफ फूड सिक्योरिटी एंड न्यूट्रिशन इन द वर्ल्ड' में सामने आई है। रिपोर्ट के अनुसार स्थिति यह है कि 2021 में करीब 82.8 करोड़ लोग भुखमरी का शिकार थे। यह आंकड़ा कितना विशाल है इसका अंदाजा इसी से लगाया जा सकता है कि यह भारत की करीब 59 फीसदी आबादी के बराबर है।

वहीं इस दौरान 230 करोड़ लोग वो थे जिन्हें दो जून की रोटी भी नसीब नहीं हुई थी। जिसका मतलब है कि दुनिया की 29.3 फीसदी आबादी के पास अभी भी पेट भरने के लिए पर्याप्त भोजन नहीं है और वो इसके लिए जद्दोजहद कर रहे हैं। गौरतलब है कि इस आंकड़े में भी महामारी के बाद से 35 करोड़ का इजाफा हुआ है। देखा जाए तो यह कहीं न कहीं बढ़ती महंगाई, महामारी और यूक्रेन, सीरिया जैसे देशों में होता संघर्ष का नतीजा है। देखा जाए तो 2019-20 में महामारी से उपजे आर्थिक संकट से दुनिया अभी तक नहीं उबर पाई है। वहीं दूसरी तरफ जलवायु में आता बदलाव इस समस्या को कहीं ज्यादा गंभीर बना रहा है। आंकड़े बताते हैं कि 2015 के बाद से दुनिया में भुखमरी का शिकार लोगों की स्थिति में कोई खास बदलाव नहीं आया है, बल्कि समय के साथ यह आंकड़ा और समस्या समस्याएं कहीं ज्यादा गंभीर होती जा रही हैं। संयुक्त राष्ट्र खाद्य एवं कृषि संगठन (एफएओ) के अनुसार जहां 2019 में विश्व की 8 फीसदी आबादी भुखमरी का शिकार थी, वो 2020 में बढ़कर 9.3 फीसदी जबकि 2021 में 0.5 फीसदी की वृद्धि के साथ 9.8 फीसदी तक पहुंच गई है। यदि महिलाओं और बच्चों की बात करें तो इस मामले में उनकी स्थिति कहीं ज्यादा खराब है। पता चला है कि जहां 2021 में करीब 32 फीसदी महिलाएं गंभीर रूप से खाद्य असुरक्षा से जूझ रही थी वहीं पुरुषों में यह आंकड़ा 27.6 फीसदी था। मतलब कि उनके बीच चार फीसदी का अंतर था। बच्चों की बात करें तो दुनिया में पांच वर्ष से कम उम्र के करीब 4.5 करोड़ बच्चे कुपोषण का शिकार थे। कुपोषण एक ऐसी घातक स्थिति है जिससे बच्चों में मृत्यु का जोखिम 12 गुना तक बढ़ जाता है। वहीं इसी आयु वर्ग के 14.9 करोड़ बच्चों के आहार में पोषक तत्वों की इतनी कमी है कि जिसकी वजह से उनका विकास पूरी तरह नहीं हो पाया है। बढ़ता मोटापा भी एक तेजी से उभरती हुई समस्या है। पता चला है कि 2021 में इस आयु वर्ग के 3.9 करोड़ बच्चों का वजन सामान्य से कहीं ज्यादा था। पिछले कुछ वर्षों में कुपोषण से निपटने के लिए स्तनपान पर जोर दिया जा रहा है, उसके बावजूद अभी भी दुनिया भर में 56 फीसदी बच्चों को छह माह की आयु तक उनकी मां का दूध नहीं मिल पा रहा है। चिंता की बात है कि अभी भी तीन में से शिशुओं को अपनी मां का दूध नहीं मिल रहा है जो उनके शारीरिक और मानसिक विकास के लिए अत्यंत जरुरी है। रिपोर्ट के अनुसार इस मामले में वैश्विक स्तर पर व्याप्त असमानता भी स्पष्ट रूप से देखी जा सकती है। आंकड़ों के मुताबिक जहां अफ्रीका की 20 फीसदी (27.8 करोड़) से ज्यादा आबादी कुपोषण का शिकार है। वहीं उत्तरी अमेरिका और यूरोप में यह आंकड़ा ढाई फीसदी से भी कम है। दक्षिण अमेरिका और कैरिबियन देशों को देखें तो वहां की 8.6 फीसदी (5.7 करोड़) आबादी कुपोषण की मार झेल रही है, जबकि ओशिनिया में 5.8 फीसदी (25 लाख) और एशिया की करीब 9.1 फीसदी (42.5 करोड़) आबादी कुपोषण से ग्रस्त है। रिपोर्ट के मुताबिक भारत में भी स्थिति कोई खास अच्छी नहीं है। वहां की 16.3 फीसदी आबादी भुखमरी का शिकार है। इतना ही नहीं भारत में पांच वर्ष से कम आयु के 17.3 के बच्चे बहुत ज्यादा पतले हैं।

वहीं इसी आयु वर्ग के 30.9 फीसदी बच्चों की ऊंचाई अन्य की तुलना में कम है। इसके साथ करीब 3.9 फीसदी बच्चे मोटापे की समस्या से जूझ रहे हैं। स्थिति यह है कि देश में 15 से 49 वर्ष की आयु की 53 फीसदी महिलाओं में खून की कमी है। रिपोर्ट के मुताबिक जहां 2012 में पांच माह की आयु के 46.4 फीसदी शिशुओं को मां का दूध मिलता था अब 2020 में यह आंकड़ा बढ़कर 58 फीसदी पर पहुंच गया है। हालांकि अभी भी देश में 42 फीसदी शिशु ऐसे हैं जिन्हें यह पोषण नहीं मिल पा रहा है।

संतुलित जीवन के महत्वपूर्ण स्तंभ पर्यावरण, पशु-पक्षी और मानव

गुजरात के राज्यपाल आचार्य देवव्रत ने नई दिल्ली में आयोजित इंडियन एनिमल हेल्थ अवॉर्ड, 2022 के विजेताओं के सम्मानित किया। उन्होंने पुरस्कार पाने वाले सभी लोगों के शुभकामनाएं दी एवं पशु स्वास्थ्य पर पहली बार इस प्रकार की गोष्ठी आयोजित करने पर प्रसन्नता व्यक्त की। एनिमल हेल्थ इंफ्रास्ट्रक्चर की श्रेणी में गुजरात को सर्वश्रेष्ठ राज्य का सम्मान मिला। गुजरात के ही रमेशभाई रुपालिया को बेस्ट फार्मर ऑफ दि ईयर के पुरस्कार से नवाज़ा गया। राज्यपाल ने कार्यक्रम उपस्थित छात्रों एवं अन्य लोगों ने अपने अनुभव साझा करते हुए कहा कि मैंने 1982 में 3 गाय से अपनी डेयरी शुरू की थी और उनकी नस्ल में सुधार करता गया जिसके परिणामस्वरूप आज मेरे पास 40 किलो प्रतिदिन दूध देने वाली गाय हैं। सिर्फ गऊ माता की जय कहने से परिणाम नहीं मिलेंगे अपितु पशुधन के स्वास्थ्य में सामूहिक सुधारों से हम आगे बढ़ सकेंगे। जब पशु पालने वाला आत्मनिर्भर बनेगा तब देश आत्मनिर्भर बनेगा। राज्यपाल ने गुजरात के 100 प्रतिशत प्राकृतिक खेती वाले डांग ज़िले का उदाहरण देते हुए कहा कि वहां हर किसान ने गाय पालना शुरू कर दिया है और जो गाय पहले 2000 रुपए की भी नहीं बिकती थी अब उनकी कीमत 20000 रुपए से भी अधिक है। किसान जब अपनी गायों का ध्यान रखेंगे और उन्हें उचित आहार देंगे तो गाय भी उन्हें दुगुना लाभ देगी। प्राकृतिक खेती से ना खरपतवार की समस्या होगी और भूजल भी संरक्षित होगा। उन्होंने कार्यक्रम में उपस्थित किसानों एवं कृषि के जानकारों को प्राकृतिक खेती एवं पशुधन के स्वास्थ्य को बढ़ावा देने का आग्रह करते हुए नारा दिया, फैमिली डॉक्टर नहीं, फैमिली फार्मर ढूंढिए, क्योंकि जब किसान और पशु स्वस्थ होंगे तभी स्वस्थ आहार होगा।

प्राकृतिक खेती के लिए जारी हुआ प्रशिक्षण, अब कृषि आदान व्यवस्था चुस्त-दुरुस्त

किसान खुद कर सकेंगे 15 अगस्त तक गिरदावरी

भोपाल। जागत गांव हमार

जिले में भी विभिन्न फसलों से संभावित रकबे को देखते हुए लक्ष्य निर्धारण कर आदान व्यवस्था की जा रही है। मौसम के बदलते परिदृश्य को देखते हुए पारम्परिक सोयाबीन की फसल के स्थान पर मूंग, उड़द, अरहर आदि दलहन फसलों का क्षेत्रफल बढ़ाने के लिए कृषकों को प्रेरित किया जा रहा है। साथ ही कम लागत प्राकृतिक खेती करने के लिए भी कृषकों को प्रेरित करने एवं प्रशिक्षण देने के लिए योजना बनाई गई है। खरीफ फसलों की बोनी का समय करीब आ गया है। खरीफ वर्ष 2022 में फसलों की बोवनी के लिए जिले में पर्याप्त मात्रा में रासायनिक उर्वरक, यूरिया, डीएपीएनपी के काम्पलेक्स एवं सिंगल सुपर फास्फेट का भंडारण सेवा सहकारी समितियों में एवं निजी संस्थाओं में किया जा चुका है। फसलों की मांग अनुसार रासायनिक उर्वरक खरीद कर अपने पास भंडारण करें। सोसायटियों से खाद नियमित रूप से खाली होता रहेगा तो जिले को मांग अनुसार नियमित आपूर्ति की समस्या का सामना नहीं करना पड़ेगा। फसलों की अच्छी पैदावार लेने के लिए किसान भी डीएपी, यूरिया के अलावा पोटाश एवं सल्फर युक्त उर्वरकों का भी प्रयोग अपने खेतों में करे। साथ ही फसलों को बोने से पूर्व बीज उपचार अवश्य करे, भूमि की उर्वरक शक्ति कायम रखने के लिए जैव उर्वरकों का भी उपयोग करें। जिले में पर्याप्त मात्रा में उर्वरकों की उपलब्धता है किसान भाईयों द्वारा उर्वरकों को खरीफ फसलों में मांग अनुसार उपयोग कर सकें।

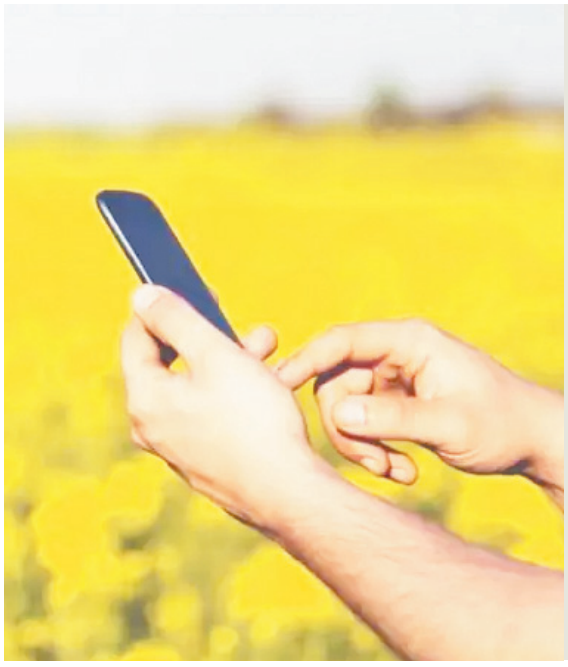

ई-गिरदावरी अपनाएं

उप संचालक, कृषि विभाग ने बताया कि ई-गिरदावरी अपनाएं, खेत से ही स्वयं फसल की जानकारी दर्ज कराएं और समय-सीमा फसल की जानकारी एक से 15 अगस्त 2022 तक दर्ज कर सकते हैं। उल्लेखनीय है कि गिरदावरी की उपयोगिता प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना के लाभ के लिए किसान क्रेडिट कार्ड, फसल ऋण एवं कृषि ऋण न्यूनतम समर्थन मूल्य पर उपज उपार्जन के लिए, फसल हानि की स्थिति के आंकलन में आवश्यक कृषि योजनाओं के विभिन्न आवेदनों में उपयोगी एमपी किसान एप है।

एमपी किसान एप डाउनलोड करें

मप्र शासन प्रक्रिया एमपी किसान एप डाउनलोड करें और लॉगिन करें, फसल स्व- घोषणा, दावा आपत्ति ऑप्शन पर क्लिक कर अपने खाते को जोड़ें प्लस ऑप्शन पर क्लिक कर जिला तहसील, ग्राम, खसरा आदि का चयन करें और खसरे पर क्लिक करने पर सैटेलाइट के माध्यम से संभावित फसल की जानकारी मिलेगी। सहमत होने पर एक क्लिक करते ही खेत पर खड़े होकर यही जानकारी दर्ज हो जाएगी। सैटेलाइट की जानकारी न होने अथवा सैटेलाइट की जानकारी से असहमत होने पर फसल की जानकारी खेत में खड़े होकर लाइव फोटो के साथ दर्ज करें।

बोगस पंजीयन रोकने आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस का पायलट प्रोजेक्ट शुरू होगा

काटन के स्टोरेज को जीएसटी न देने से मप्र के कपास उद्योग को मिलेगी राहत

-जीएसटी काउंसिल की 47वीं बैठक में वित्त मंत्री जगदीश देवड़ा ने कहा

भोपाल। जागत गांव हमार

वित्त एवं वाणिज्यिक कर मंत्री जगदीश देवड़ा ने कहा है कि मध्यप्रदेश के दक्षिण-पश्चिम क्षेत्र मालवा एवं निमाड़ में कपास के अधिक मात्रा में उत्पादन को देखते हुए काटन के स्टोरेज एवं वेयरहाउसिंग पर जीएसटी की देयता न होने संबंधी स्पष्टीकरण से कपास उद्योग को राहत मिलेगी। हाल ही में चंडीगढ़ में जीएसटी काउंसिल की 47वीं बैठक में विभिन्न मुददों पर अपने संबोधन में मंत्री देवड़ा ने फिटमेंट कमेटी के इस प्रस्ताव का समर्थन किया कि समस्त प्रकार के भूखंड के विक्रय पर जीएसटी की देयता नहीं होगी। उन्होंने कहा कि यह प्रस्ताव रियल एस्टेट सेक्टर तथा भूखंड क्रय करने वाले व्यक्तियों के मध्य भ्रम की स्थिति को समाप्त करने में उपयोगी होगा। साथ ही रियल एस्टेट सेक्टर के विकास में भी सहायक होगा। बैठक की अध्यक्षता केन्द्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने की। राज्य की ओर से प्रमुख सचिव वाणिज्यिक कर दीपाली रस्तोगी और आयुक्त वाणिज्यिक कर लोकेश कुमार जाटव भी उपस्थित थे।

बोगस पंजीयन में लगेगी लगाम

मंत्री ने कहा कि इस संबंध में उचित होगा कि एपीआई के माध्यम से राज्य के भू-अभिलेख, बिजली बिल, लीज अनुबंध, लीज डीड, संपत्ति आईडी तथा शहरी स्थानीय निकाय में संपत्ति ब्यौरा के डिजिटाइज्ड डेटाबेस का पंजीयन के समय दी गई जानकारी से सत्यापन किया जाए। इससे बोगस पंजीयन प्राप्त करने में रोक लगेगी। इसके लिए आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस के उपयोग का भी सुझाव टास्क फोर्स द्वारा दिया गया है। मध्यप्रदेश में इसका पायलट प्रोजेक्ट प्रारंभ करने के लिए भारत सरकार के राजस्व मंत्रालय के साथ चर्चा की गई है।

टीकमगढ़ के वैज्ञानिकों ने चलाया गाजरघास उन्मूलन अभियान

टीकमगढ़। कृषि विज्ञान केंद्र, टीकमगढ़ के प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रमुख डॉ. बीएस किरार, वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. आरके प्रजापति, डॉ. एसके सिंह, वैज्ञानिक डॉ. एसके जाटव, डॉ. आईडी सिंह, जयपाल छिगारहा, मनोहर चढ़ार (वाहन चालक) एवं डॉ. दिनेश कुमार, सहायक प्राध्यापक, आदि ने कृषक भवन के चारों तरफ लगे गाजरघास को निकालकर स्वच्छता का संदेश दिया। गाजरघास का वानस्तिक नाम पार्थेनियम हिस्ट्रोफोरस है। यह एक वर्षीय शाकीय पौधा है। इसका तना रोएंदार एवं अत्याधिक शाखायुक्त होता है। प्रारंभिक अवस्था में इसकी पत्तियां गाजर के समान होती है। प्रत्येक पौधा एक वर्ष में लगभग 10000 से 25000 अत्यंत सूक्ष्म बीज पैदा करता है। बीजों में शुषुप्तावस्था नहीं होने के कारण बीज परिपक्व होकर जमीन में गिरने के बाद नमी पाकर पुनः अंकुरित हो जाते हैं। गाजरघास का पौधा लगभग 3-4 महीने में अपना जीवन चक्र पूरा कर लेता है। यह पौधा प्रकाश एवं तापमान के प्रति उदासीन होता है। यह पौधा पूरे वर्षभर उगता एवं फूलता-फलता रहता है। गाजरघास से मानव समाज एवं पशुओं के स्वास्थ्य पर काफी हानिकारक प्रभाव पड़ता है। गाजरघास के लगातार संपर्क में आने से मनुष्यों में डरमेटाइटिस, एक्जिमा, एलर्जी, बुखार, दमा, आदि जैसी बीमारियां हो जाती हैं। पशुओं के लिए यह गाजरघास अत्याधिक विषाक्त होता है। इसके खाने से पशुओं में अनेक प्रकार के रोग पैदा हो जाते हैं, जिससे दुधारू पशुओं के दूध में कडुवाहट के साथ-साथ दूध उत्पादन में भी कमी आने लगती है। गाजर घास द्वारा खाद्यान्न फसलों की पैदावार में लगभग 40 फीसदी तक की कमी आंकी गई है। पौधे में सेस्क्यूटरपिन लैक्टोन नामक विषाक्त पदार्थ पाया जाता है, जो फसलों के अंकुरण एवं वृद्धि पर प्रतिकूल प्रभाव डालता है। गाजरघास के नियंत्रण के शाकनाशियों रसायनों में एट्राजिन, एलाक्लोर, डाइयूरान, मेट्रीब्यूजिन, 2,4-डी, ग्लाइफोसेट, आदि का छिड़काव करना चाहिए। यदि मेड, मैदान, सड़क के किनारे में गाजरघास के साथ सभी प्रकार की वनस्पतियों को नष्ट करने के लिए ग्लाइफोसेट 1 से 1.5 प्रतिशत का छिड़काव करें और केवल गाजरघास को नष्ट करने के लिए मेट्रीब्यूजिन 0.3 से 0.5 प्रतिशत का घोल बनाकर छिड़काव करें। जैविक नियंत्रण अंतर्गत मैक्सिकन बीटल (जाइगोग्रामा बाइकोलोराटा) नामक केवल गाजरघास की पत्तियों को खाकर चट कर जाता है। किसान गाजरघास के पौधे को शुरू की अवस्था में निकालकर कम्पोस्ट खाद बना सकते हैं, इसमें नाइट्रोजन, फास्फोरस एवं पोटाश आदि पोषक तत्व गोबरखाद से ज्यादा पाए जाते हैं। स्वच्छता एवं गाजरघास उन्मूलन का कार्यक्रम कार्यालय व आवासीय परिषर के साथ चयनित गाँवों में सप्ताह में एक दिन वैज्ञानिक श्रमदान कर कृषकों, महिलाओं एवं छात्र-छात्राओं को भी स्वच्छता के लिए जागरूक एवं प्रेरित करने का काम करेंगे।

पशुओं के लिए लगाए बहुवर्षीय नेपियर हाइब्रिड बाजरा

टीकमगढ़। कृषि विज्ञान केंद्र टीकमगढ़ के प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रमुख डॉ. बीएस किरार, डॉ. आरके प्रजापति, डॉ. एसके सिंह एवं जयपाल छिगारहा द्वारा बताया गया कि पशुओं के लिए बहुवर्षीय नेपियर हाइब्रिड बाजरा लगाने से पशुओं को वर्ष भर हरा चारा मिलेगा। इस घास को किसी भी प्रकार की मिट्टी एवं जलवायु में उगाया जा सकता है। जिन किसानों के पास सिंचाई साधन है वह वर्षभर पशुओं के लिए पौष्टिक हरा चारा प्राप्त कर सकते हैं। इसकी उन्नत किस्में सीओ-4 एवं सीओ-5 ज्यादा उपयोगी है। इसे खरीफएवं रबी मौसम में लगा सकते हैं लेकिन इसे लगाने का उपयुक्त समय जून के अंतिम सप्ताह से जुलाई माह है। इसे उगाने के लिए इसका तना या रूट स्लिपस काम में ली जाती है। एकल फसल के लिए इसकी 171 मीटर की दूरी पर कटिंग लगाई जाती है। इस प्रकार एक एकड़ में 4000 रूट स्लिपस (कटिंग) लगाई जाती है। यह हाई न्यूट्रिटिव वैल्यू की वजह से व्यापक रूप से हरा चारा के रूप में पसंद किया जा रहा है। इसमें क्रूड प्रोटीन 14-15 प्रतिशत है और शुष्क पदार्थ 22 प्रतिशत है। इस घास की एक वर्ष में 6 कटाई की जाती है। इस घास की पाचन क्षमता 60 प्रतिशत के करीब है। यह चारा दुधारू पशुओं के लिए काफी लाभदायक है। पहली कटाई बोवनी या कटिंग लगाने के 50 दिन बाद, उसके बाद जब फसल की ऊंचाई एक मीटर हो जाए उस समय कटाई कर लेना चाहिए। किसी भी स्थिति में चारा को 2 मीटर से ज्यादा नहीं बढ़ने देना चाहिए। जो किसान नेपियर हाइब्रिड बाजरा लगाना चाहते हैं वह किसान रूट स्लिपस (कटिंग) के लिए कृषि विज्ञान केंद्र, कुंडेश्वर रोड, टीकमगढ़ में संपर्क कर एक रुप प्रति रूट स्लिपस प्राप्त कर सकते हैं।

मैपिंग के दौरान पकड़ में आया पीएम किसान सम्मान निधि में हुआ फर्जीवाड़ा, राशि वसूली की होगी कार्रवाई

फर्जीवाड़ा : श्योपुर के 3821 अपात्र किसानों ने ले ली 3.29 करोड़ रुपए की सम्मान निधि

खेम राज मौर्य। शिवपुरी/श्योपुर

प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि योजना में करोड़ां का फर्जीवाड़ा उजागर हुआ है। श्योपुर जिले के 3 हजार 821 लोग फर्जी किसान बनकर पीएम किसान सम्मान निधि का लाभ ले रहे थे। यह फर्जी किसान अब तक 3 करोड़ 29 लाख 52 हजार रुपए का लाभ ले चुके हं। इन फर्जी किसानों ने असली किसान बनने के लिए झूठे शपथपत्र दिए गए थे। जिला प्रशासन की टीम को यह फर्जीवाड़ा लाभार्थी किसानों की मैपिंग के दौरान पकड़ में आया। मैपिंग के दौरान ऐसे फर्जी किसान भी सामने आए हैं, जिन्होंने आयकारदाता, किसान की पत्नी और पेंशन के हकदार होने के बाद भी किसान सम्मान निधि का लाभ लेने के लिए झूठे शपथ पत्र दे दिए गए। इसलिए जिला प्रशासन ने मैपिंग के दौरान पकड़ में आए फर्जी किसानों से पीएम किसान सम्मान निधि की राशि वापस लेने की कार्रवाई शुरू कर दी है।

बताया गया है कि, प्रशासन की सख्ती देख 33 फर्जी किसानों ने पीएम सम्मान निधि की राशि सरेंडर कर दी है। यहां बता दें कि मोदी सरकार के द्वारा देशभर के किसानों को आर्थिक मदद देने के लिए पीएम किसान सम्मान निधि योजना शुरू की गई। 24 फरवरी 2019 से शुरू की गई पीएम किसान सम्मान निधि योजना में आर्थिक रूप से कमजोर उन किसानों को राहत दी जाती है, जिनके पास खुद की बहुत कम जमीन हो, जो दूसरे के खेतों में मजदूरी करते हैं तथा आयकर दाता व पेंशनर्स नहीं होना चाहिए। ऐसे किसानों को इस योजना के तहत मोदी सरकार के द्वारा हर साल 6 हजार रुपए की राशि प्रदाय की जाती है।

यह है सम्मान निधि

प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि में किसानों को हर साल केंद्र सरकार से नकद छह हजार सालाना मिलते हैं। किसानों की आय दोगुनी करने के लिए उन्हें सीधे नकद राशि मुहैया कराई जाती है। किसानों को 3 किस्तों में रुपए मुहैया कराती है। हर किस्त में दो हजार रुपए दिए जाते हैं।

34 किसानों ने लौटाई 2.84 लाख की राशि

फर्जी किसानों के पकड़ में आने के बाद जिला प्रशासन ने ऐसे किसानों से पीएम किसान सम्मान निधि की राशि वापस लेने की कार्रवाई शुरू कर दी है। प्रशासन की सख्ती के चलते 34 किसानों ने 2 लाख 84 हजार रुपए की राशि वापस लौटा दी है। बताया गया है कि प्रशासन की टीम शेष अन्य फर्जी किसानों से भी राशि की वसूली करेगी। चुनावी आचार संहिता हटने के बाद प्रशासन इस मामले में एक्शन करेगा।

परिवार में एक व्यक्ति ही होगा पात्र

किसान परिवार के एक व्यक्ति को ही इस योजना का लाभ मिल सकता है। किसान सहित उसकी पत्नी या बेटे को इसका लाभ नहीं मिल सकता है। अगर किसी को दस हजार रुपए तक पेंशन मिलती है, तो उसे भी इस योजना का लाभ नहीं मिल सकता है। इसके अलावा सरकारी कर्मचारी, आयकर दाता, मंत्री, सांसद, विधायक, डॉक्टर, इंजीनियर को भी सम्मान निधि नहीं मिलेगी।

3 हजार 821 ऐसे किसान चिन्हित कर लिए गए है,जो अपात्र होने के बाद भी पीएम किसान सम्मान निधि का लाभ ले रहे थे। चिन्हित लोगों से राशि वापस ली जाएगी। इसके लिए कार्रवाई चल रही है।

राकेश वर्मा, प्रभारी अधीक्षक भू-अभिलेख, श्योपुर

पति-पत्नी,जिन्होंने अपात्र बनकर ली सम्मान निधी

तहसील	अपात्र किसान	किश्त	राशि ली
बड़ौदा	1940	7292	1,45,84000
वीरपुर	193	1139	2,27,8000
कराहल	239	1335	26,70000
श्योपुर	797	4096	81,92,000
विजयपुर	162	813	1,62,6000
बड़ौदा शहर	19	57	1,14,000
अन्य	19	57	1,14,000

आयकर दाता,जिन्होने अपात्र किसान बनकर ली सम्मान निधी

तहसील	अपात्र किसान	किश्त	राशि ली
बड़ौदा	82	317	634000
वीरपुर	50	183	366000
कराहल	33	110	220000
श्योपुर	188	746	1492000
विजयपुर	61	214	4,28,000
बड़ौदा शहर	07	18	36000
श्योपुर शहर	12	36	72000
विजयपुर शहर	04	10	20,000
अन्य	15	53	10,6000

फैक्ट फाइल

- 93000 किसान ले रहे पीएम किसान सम्मान निधि
- 3821 अपात्र किसान आए पकड़ में
- 3.29 करोड़ की राशि अपात्र किसानों से होगी वसूल
- 04 अपात्र किसानों ने लौटा दी राशि

बीते साल से ज्यादा रह सकता है सोयाबीन का रकबा

देश में सोयाबीन की बोवनी 70 लाख हेक्टेयर में होगी

इंदौर। जागत गांव हमार

जारी खरीफ सीजन में देश में सोयाबीन का रकबा बीते वर्ष के बराबर तो हो ही जाएगा। रकबा बीते वर्ष से थोड़ा ज्यादा भी रह सकता है। सोयाबीन प्रोसेसर्स एसोसिएशन आफ इंडिया (सोपा) ने यह अनुमान जताया है। सोपा ने अपने सर्वे के आधार पर देश के प्रमुख सोयाबीन उत्पादक राज्यों में अब तक हुई सोयाबीन की बोवनी का आंकड़ा भी जारी किया है। अपने सर्वे को आधार बनाते हुए सोपा ने कहा है कि 6 जुलाई तक की स्थिति में देश में 70 लाख 6 हेक्टेयर से ज्यादा क्षेत्र में सोयाबीन की बोवनी हो चुकी है। सोपा के सर्वे के अनुसार 6 जुलाई तक सबसे ज्यादा सोयाबीन की बोवनी मप्र में हुई है। प्रदेश में कुल 30.50 लाख हेक्टेयर में सोयाबीन बुवाई होने का आंकड़ा सोपा ने जारी किया है।

दूसरे नंबर पर महाराष्ट्र

पहले सरकार ने 1 जुलाई तक मप्र में सिर्फ 3.34 लाख हेक्टेयर में सोयाबीन बोवनी की बात कही थी। यानी 6 दिनों के अंतर पर ही सोपा और सरकार के सर्वेक्षण में करीब 10 गुना का अंतर आ रहा है। बोवनी में दूसरे नंबर पर सोपा ने महाराष्ट्र को माना है। सोपा के अनुसार महाराष्ट्र में कुल 26 लाख हेक्टेयर में सोयाबीन की बोवनी हो चुकी है। दूसरी ओर सरकारी सर्वेक्षण में एक जुलाई तक महाराष्ट्र में 20 लाख हेक्टेयर में ही बोवनी मानी थी।

तीसरे नंबर पर राजस्थान

सोपा के सर्वेक्षण में राजस्थान में 7 लाख हेक्टेयर, तेलंगाना में 2.60 लाख हेक्टेयर, कर्नाटक में 2.37 लाख हेक्टेयर, गुजरात में 1 लाख हेक्टेयर में सोयाबीन की बोवनी की बात कही है। एक जुलाई की स्थिति में सरकार के सर्वेक्षण में कुल बोवनी का क्षेत्रफल 34.91 लाख हेक्टेयर बताया गया था। सोपा का सर्वेक्षण 6 जुलाई तक 70.06 लाख हेक्टेयर में बोवनी बता रहा है।

सोयाबीन से मोहभंग नहीं

सोपा के सर्वे पर यकीन करें तो ताजा स्थिति में देश के प्रमुख सोयाबीन उत्पादक राज्यों मप्र, महाराष्ट्र और राजस्थान के किसानों का सोयाबीन से मोहभंग नहीं हुआ है। दरअसल, बीते सीजन में मक्का और कपास के दाम मंडियों में सर्वोच्च स्तर पर पहुंच गए थे। ऐसे में आशंका जताई जा रही थी कि किसान बड़े पैमाने पर खरीफ सीजन के दौरान मक्का और कपास की बोवनी में रुचि ले सकते हैं। ऐसे में सोयाबीन का रकबा घट सकता है। हालांकि फिलहाल सोपा का सर्वेक्षण इस आशंका को खारिज करता दिख रहा है। सोपा ने निष्कर्ष दिया है कि उम्मीद है कि सीजन के आखिर तक कुल रकबा बीते साल के बराबर या उससे ज्यादा रहेगा।

आवश्यकता

भोपाल, इंदौर, उज्जैन, सागर और मुरैना से प्रकाशित

जागत गांव हमार

कृषि और पंचायत पर आधारित साप्ताहिक समाचार पत्र के लिए जिला, जनपद स्तर पर संवाददाता चाहिए।

संपर्क करें

जबलपुर, प्रवीण नामदेव-9300034195
शहडोल, राम नरेश वर्मा-9131886277
नरसिंहपुर, प्रहलाद कौरव-9926569304
विदिशा, अवधेश दुबे- 9425148554
सागर, अनिल दुबे-9826021098
राहतगढ़, भगवान सिंह प्रजापति-9826948827
दमोह, बंटी शर्मा -9131821040
टीकमगढ़, नीरज जैन -9893583522
राजगढ़, गजराज सिंह मीणा -9981462162
बैतूल, सतीष साहू-8982777449
मुरैना, अवधेश दण्डोतिया -9425128418
शिवपुरी, खेमराज मौर्य-9425762414
भिण्ड- नीरज शर्मा-9826266571
खरगौन, संजय शर्मा-7694897272
सतना, दीपक गौतम-9923800013
रीवा-धनंजय तिवारी-9425080670
रतलाम, अमित निगम-70007141120
झाबुआ-नोमान खान-8770736925

कार्यालय का पता:- लाजपत भवन प्रथम तल, आईसीआईसीआई बैंक के पास, एमपी नगर, जोन-1, भोपाल, मप्र,
संपर्क करें- 07554064144, 9229497393, 9425048589

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक अजय कुमार द्विवेदी द्वारा जय माता प्रिंटर्स, मं.नं.1, पेमदीपुरा बापू कालोनी के पास चिकलोद रोड, जहांगीराबाद, भोपाल(मप्र) से मुद्रित एवं एमआईजी 30, शिवकल्प, अयोध्या बाईपास भोपाल, मप्र से प्रकाशित। संपादक: अजय कुमार द्विवेदी, स्थानीय संपादक- **अरविंद मिश्र, संपर्क** -9229497393, 9425048589, ईमेल:- jagatgaon.bpl@gmail.com (सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल होगा)